RAJBIL26868/2016/1284525

6 वर्ष 6 अंक

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद, देश व प्रदेश की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

Jaivardhan News

हिन्दी मासिक पत्रिका अगस्त 2024

पेज संख्या : 28

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

Alok Sr. Sec. School Rajsamand

CBSE 10+2 (Science/Commerce/Arts)

A Truly Indian International School

Congratulations to Proud Achievers

Continuing its legacy of excellence in Academics, Values, Sports & Technology.

Rajlaxmi Shaktawat
98.2% (XII)
DISTRICT TOPPER
Udaipur & Rajsamand

Yash Paliwal
97% (X)
2nd DISTRICT TOPPER
Rajsamand

Santosh K. Rathore
94.4% (XII)
2nd Distict Topper

Suhani Sharma
92.4% (XII)

Maya Sindhal
91% (XII)

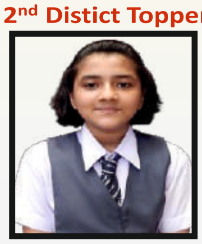

Jeenal Nandwana
96.4% (X)
3rd Distict Topper

Siddhi Sharma
94.4% (X)
4th Distict Topper

Kinjal Rajpurohit
94.2% (X)
5th Distict Topper

Number of students scored above 90 in class X & XII - 84

BEST FACULTY　BEST MANAGEMENT　BEST RESULT

- Highest number of optional subjects for Class 11.
- Bus fee FREE for Class Nursery.
- Introduced ARTIFICIAL INTELLIGENCE & ROBOTICS.
- Special sessions for JEE(Mains), NEET, CUET, Olympiads, NTSE, STSE (Highest number of selections).

+91-9414232523　New Shiv Nagar Colony, Jawad Bypass, Rajsamand

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाश
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
लक्ष्मणसिंह राठौड़

वितरण विभाग
सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स,
द्वितीय मंजिल, सौ फीट रोड, राजसमंद
मो. 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशंचद आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद व आभारी है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

सम्पादकीय

स्वतंत्रता की सार्थकता

स्वतंत्रता मानवता का एक ऐसा सपना है जिसके लिए सदियों से संघर्ष किया गया है। यह सिर्फ एक शब्द नहीं बल्कि एक भावना है, एक आकांक्षा है, और एक अधिकार है। लेकिन क्या स्वतंत्रता सिर्फ किसी विदेशी शासन से मुक्ति पा लेना ही है? या इसके और भी गहरे अर्थ हैं?

अपने विचारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रताः बिना किसी डर या दबाव के अपनी बात कहने का अधिकार।

धर्म की स्वतंत्रताः अपनी पसंद का धर्म अपनाने और उसका पालन करने की स्वतंत्रता।

जीवन जीने की स्वतंत्रताः अपनी पसंद का जीवन जीने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की स्वतंत्रता।

भेदभाव रहित समाजः जाति, धर्म, लिंग या अन्य किसी आधार पर भेदभाव से मुक्त समाज।

समान अवसरः सभी के लिए समान अवसर और विकास की संभावनाएं।

समाज सेवाः समाज के उत्थान के लिए काम करने की स्वतंत्रता।

लोकतंत्रः जनता द्वारा चुनी हुई सरकार।

कानून का शासनः सभी के लिए समान कानून और न्याय।

भ्रष्टाचार मुक्त शासनः एक ईमानदार और पारदर्शी सरकार।

आत्मनिर्भरताः अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता।

विकासः देश का सर्वांगीण विकास।

गरीबी उन्मूलनः सभी के लिए बुनियादी सुविधाएं और जीवन स्तर में सुधार।

स्वतंत्रता सिर्फ एक राजनीतिक अवधारणा नहीं है, बल्कि यह जीवन का एक अभिन्न अंग है। यह व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सभी स्तरों पर महत्वपूर्ण है। स्वतंत्रता की सार्थकता तभी संभव है, जब हम सभी मिलकर इसके लिए काम करें।

ललिता राठौड़
सम्पादक

सन-शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
RKCL का अधिकृत ज्ञान केन्द्र
Tally, DTP, PGDCA
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
प्रवेश प्रारम्भ
पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा
मो. 9649813798, 9950084705
फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांगुड़ा मो. 9024034696

जे.के. टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेके ग्राम, कांकरोली (राज.)
स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं
JK TYRE
& INDUSTRIES LTD.

कवर स्टोरी

विनेश फोगाट का ओलंपिक से अयोग्य होना दुर्भाग्यपूर्ण, मगर एक सबक भी

विनेश फोगाट का नाम भारतीय कुश्ती में सुनहरा अक्षरों में लिखा गया है। उन्होंने अपनी मेहनत और लगन से देश का नाम रोशन किया है, लेकिन हाल ही में पेरिस ओलंपिक में उनके डिसक्वालिफिकेशन ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। इस घटना के बाद से सोशल मीडिया और मीडिया में तरह-तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं। कुछ लोग इसे साजिश का नाम दे रहे हैं तो कुछ इसे दुर्भाग्यपूर्ण घटना.वजन का खेल और विनेश की चुनौतियाँकुश्ती में वजन का खेल बेहद महत्वपूर्ण होता है. विनेश फोगाट ने हमेशा अपने से कम वजन वर्ग में खेलने की कोशिश की है. 57 किलो वजन वर्ग में खेल चुकी विनेश ने 53 किलो वजन वर्ग में भी हिस्सा लिया था, लेकिन इस बार उन्होंने 7 किलो वजन घटाकर 50 किलो वजन वर्ग में भाग लिया। ये फैसला उनके लिए आसान नहीं था। 29 साल की उम्र में और अगले ओलंपिक तक 33 साल की हो जाने की वजह से उन्होंने ये जोखिम उठाया। अंतिम क्षणों का संघर्ष प्रतियोगिता से ठीक पहले विनेश का वजन 49.9 किलो था। उन्होंने कई दिनों तक बहुत कम खाया और पानी भी कम पीया, लेकिन तीन मैच खेलने के बाद उनके शरीर में एनर्जी का स्तर कम हो गया और उन्हें कुछ डाइट लेनी पड़ी। इस वजह से उनका वजन 2.8 किलो बढ़ गया। उन्होंने रातभर मेहनत करके 2.7 किलो वजन कम किया, लेकिन फिर भी 100 ग्राम ज्यादा रह गया। साक्षी मलिक ने बताया कि विनेश ने वजन कम करने के लिए खून तक निकलवाया।

इस पूरे मामले में सबसे बड़ा सवाल ये है कि क्या ये एक साजिश थी? कुछ लोग मानते हैं कि विनेश के साथ अन्याय हुआ है और उन्हें जानबूझकर निशाना बनाया गया, लेकिन सच्चाई यह है कि कुश्ती के नियम बहुत सख्त होते हैं और ओलंपिक जैसी बड़ी प्रतियोगिता में हर चीज का ध्यान रखा जाता है।

विनेश फोगाट एक बेहद जज्बाती खिलाड़ी हैं। उन्होंने कॉमनवेल्थ और एशियन खेलों में देश के लिए कई पदक जीते हैं। उनके हारने से पूरे देश को दुख हुआ है, लेकिन हमें ये नहीं भूलना चाहिए कि खेल में जीत और हार लगी रहती है। हम सबकी जिम्मेदारी हमें सोशल मीडिया पर अफवाहें फैलाने से बचना चाहिए और खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाना चाहिए। विनेश फोगाट ने अपनी मेहनत और लगन से देश का नाम रोशन किया है। हमें उन्हें इस मुश्किल समय में अपना समर्थन देना चाहिए। विनेश फोगाट का ओलंपिक से डिसक्वालिफिकेशन एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना है, लेकिन हमें इस घटना से सीख लेनी चाहिए और भविष्य में हमारे खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं और प्रशिक्षण देना चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसे हालात उत्पन्न न हो। इस तरह के हालात से अन्य खिलाड़ियों में भी नकारात्मक भावना उत्पन्न होती है, जो बहुत घातक हो सकती है। इसलिए सकारात्मक बातें को ज्यादा से ज्यादा फैलाने की जरूरत है न कि बुरी।

विनेश की बायोग्राफी

साल 2023 में दिल्ली के जंतर-मंतर पर महिला पहलवानों के कथित यौन शोषण के विरोध के दौरान एक तस्वीर खूब वायरल हुई। एक महिला रेसलर हाथ में तिरंग लिए फूट-फूट कर रो रही थी और पुलिसकर्मी उसे जमीन पर घसीट रहे थे। वो रेसलर कोई और नहीं पेरिस ओलिम्पिक के फाइनल तक धाकड़ अंदान में पहुंची विनेश फोगाट ही थीं। विनेश का यहां तक का सफर बेहद कठिन रहा है। 9 साल की उम्र में पिता को खो देने के बाद गांव और समाज के लोग लगातार उनके परिवार पर जल्दी शादी का दबाव बनाते रहे, लेकिन विनेश ने हार नहीं मानी। वे बचपन से जुझारू थीं। उनके भाई हरविंदर बताते हैं कि दादा अखाड़े में जाकर पहलवानी करते थे। विनेश जब केवल 6 साल की थी तभी से अखाड़े में जाकर पहलवानी के गुर सीखने लगीं थीं। उनके चाचा महावीर फोगाट ने जब अपनी बेटियों गीता, बबीता के साथ विनेश को ट्रेनिंग देनी शुरू की तब सभी को नियमित अखाड़े पर आने के लिए कहा। विनेश नेबास को इतनी गंभीरता से लिया कि बीमार होने के बावजूद रोज अखाड़े जाती थी। सुबह 3.30 बजे उठकर प्रैक्टिस करने लगती थीं, जो कभी 7 बजे तक तो कभी आठ बजे तक भी चलती थी। रियो ओलिम्पिक में घुटने की चोट के बाद जब लोग उनके करियर को खत्म मानने लगे थे तब उन्होंने अस्पताल से ही वापसी की घोषणा कर दी थी। और उसके बाद कॉमन वेल्थ सहित कई प्रतियोगिताओं में गोल्ड मेडल जीते लिए थे। उनके इस जुझारूपन के कारण साथी रेसलर उन्हें 'क्वीन बी' भी कहते हैं।

जीवन से जुड़े रोचक तथ्य

- वे खेल के क्षेत्र में प्रतिष्ठित लॉरियस वर्ल्ड स्पोर्ट्स अवॉर्ड के लिए नामित होने वाली पहली भारतीय रेसलर हैं।
- 2016 में भारत सरकार ने अर्जुन अवॉर्ड से सम्मानित किया था।
- बीबीसी इंडियन स्पोर्ट्सवुमन ऑफ द ईयर 2022 के लिए नामित की जा चुकी हैं।
- विनेश ने अभी तक तीन ओलिम्पिक खेले हैं। वे 2016 के ओलिम्पिक में 48 किग्रा, 2020 में 53 किग्रा और 2024 में 50 किग्रा कैटेगिरी में शामिल हुई थीं।
- विनेश ने शादी में आठ फेरे लिए थे। आठवां फेरा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ और बेटी खिलाओ' के संकल्प का था।
- विनेश ने भारत के लिए रेसलिंग में अब तक विभिन्न अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में 15 मेडल जीते हैं। इनमें वर्ल्ड चैम्पियनशिप, एशियन गेम्स, कॉमनवेल्थ गेम्स और एशियन चैम्पियनशिप जैसी बड़ी प्रतियोगिताएं शामिल हैं, जहां उन्होंने 5 स्वर्ण, तीन रजत और 7 कांस्य पदक अपने नाम किए हैं। इन प्रतियोगिताओं में कई रिकॉर्ड भी उन्होंने बनाए हैं।

विनेश फोगाट की उपलब्धियां

साल	टूर्नामेंट	पदक
2024	पेरिस ओलंपिक	पदक पक्का
2022	राष्ट्रमंडल खेल	स्वर्ण
2022	विश्व चैंपियनशिप	कांस्य
2019	विश्व चैंपियनशिप	कांस्य
2018	राष्ट्रमंडल खेल	स्वर्ण
2018	एशियाई खेल	स्वर्ण
2014	राष्ट्रमंडल खेल	स्वर्ण
2014	एशियाई खेल	कांस्य

- **विवाद** : 2020 के टोक्यों ओलिम्पिक में ऑफशिथिल किट न पहनने और अनुशासनहीनता के आरोप उन पर लगे थे। इस पर भारतीय कुश्ती संघ ने उन्हें निलंबित भी कर दिया। वहीं महिला पहलवानों के कथित यौन शोषण मामले में साल 2023 में दिल्ली के जंतर-मंतर में हुए प्रदर्शन शामिल हुई।

बचपन में पिता की हत्या, मां को कैंसर

विनेश का जन्म हरियाणा के चरखी दादरी जिले के बलाली गांव में राजपाल और प्रेमलता के घर हुआ था। पिता रोडवेज विभाग में चालक थे। विनेश जब केवल 9 साल की थीं तभी उनकी मां को बच्चेदानी का कैंसर डिटेक्ट हुआ। परिवार का दुख यहीं नहीं खत्म हुआ। उसके ठीक तीन दिन बाद जमीन के विवाद में परिवार के ही कुछ लोगों ने पिता की हत्या कर दी। मां ने तमाम संघर्षों के साथ विनेश सहित तीन बच्चों को पाला। विनेश ने 2018 में साथी रेसलर सोमबीर राठी से शादी की है।

एक नजर में महत्वपूर्ण तथ्य :

जन्म: 25 अगस्त 1994, हरियाणा

शिक्षा: स्नातक, महर्षि दयानंद विवि, रोहतक

परिवार: पति-सोमवीरराठी

संपत्ति: 36.5 करोड़ रुपए (विभिन्न मीडिया रिपोर्ट्स)

करियर: दुनिया की नंबर एक खिलाड़ी रह चुकी हैं। उनके चाचा महावीर फोगाट ने उन्हें शुरुआती ट्रेनिंग दी। इसके बाद 2013 में दिल्ली में आयोजित एशियाई कुश्ती चैम्पियनशिप के जरिए विनेश ने रेसलिंग में अंतरराष्ट्रीय करियर की शुरुआत की। जल्द ही उन्होंने कॉमनवेल्थ और एशियन गेम्स में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया। वे ऐसा करने वाली पहली भारतीय महिला रेसलर बनीं। इसके अलावा ओलिम्पिक में रेसलिंग के फाइनल में पहुंचने वाली पहली महिला भी हैं। वे 53 किग्रा भार वर्ग में दुनिया की नंबर एक खिलाड़ी रह चुकी हैं।

चक दे इंडिया

अभी ओलंपिक का खुमार सबके सर चढ़कर बोल रहा है, हिंदुस्तान ने भी 2024 ओलंपिक में 16 खेलों मे 117 खिलाड़ी का दल भेजा है, अगर पदक तालिका पर नजर डाली जाए तो 140 करोड़ लोगों का देश सिर्फ और सिर्फ 6 पदक लेकर आया और उसमें भी स्वर्ण तो है ही नहीं, दूसरी तरफ ऐसे कई देश है जिनकी आबादी 1 लाख से भी कम है, वह भी स्वर्ण पदक की तालिका में दिखाई दे रहे हैं।

आखिर हमारे हिंदुस्तान में खेलों की इतनी दुर्दशा का कारण क्या है, सरकार इस पर अरबो रुपए खर्च भी करती है, लेकिन जब किसी भी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में भारत के खिलाड़ी जाते हैं, तो वहां पर उनके द्वारा निराशाजनक प्रदर्शन ही दिखाई देता है।

हमारे हिंदुस्तान में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है, लेकिन राजनीति में वह प्रतिभाएं कही दब के दम तोड़ देती है, खिलाड़ी कच्ची उम्र में ही तैयार किये जा सकते हैं। उसके लिए स्कूल स्तर पर भी कई टूर्नामेंट होते हैं, लेकिन देखा जाता है कि स्कूलों में भी सिर्फ और सिर्फ नाम मात्र के शारीरिक शिक्षक बच्चों पर मेहनत करते हुए दिखाई देते हैं। सरकारी टूर्नामेंट में तो कई जिलों की टीमें भी नहीं बन पाती है, हर जिले, तहसील स्तर पर हर स्कूल में शारीरिक शिक्षक की नियुक्ति होते हुए भी वहां पर खिलाड़ी तैयार नहीं होते हैं। यह एक बहुत बड़ा प्रश्न हमारी व्यवस्थाओं पर दिखाई देता है, आखिर जिन शारीरिक शिक्षकों को खिलाड़ियों को तैयार करने के लिए सरकार के द्वारा नियुक्त किया गया है, वही खिलाड़ीयों को तैयार नहीं कर रहे हैं, इसकी ऐवज में वह हजारों रुपए की तनख्वाह हर महीने पाते हैं, यही हाल जिला स्तर और राज्य स्तर पर भी हमें को देखने को मिलता है, जहां पर खेल अधिकारी सिर्फ और सिर्फ कागजों में खिलाड़ी तैयार करते हैं, जिसका नतीजा देश के खेलों पर पड़ रहा है।

अगर हम दूसरे देशों को देखे और उनकी व्यवस्थाओं के बारे में जाने तो हमें पता चलेगा कि वहां पर खिलाड़ियों को तैयार करने वाले कोच, शिक्षक अगर परिणाम नहीं देते हैं, तो उनको अयोग्य घोषित कर दिया जाता है। अगर इसी प्रकार सख्ती यहां पर भी बरती जाती है तो आने वाले कुछ सालों में खेलों में भारत की तस्वीर बहुत कुछ बदल कर सामने आ सकती है।

हिंदुस्तान में सभी सरकारी स्कूलों के शारीरिक शिक्षक प्रार्थना, पीटी कराकर इतिश्री कर लेते हैं, लेकिन मूल रूप से उनका कार्य यह है कि बच्चों को सभी तरह के खेलों में प्रशिक्षित करें। ऊपर के स्तर पर देखा जाए तो हमारे यहां के खेल उन लोगों के हाथ में है, जिनको खेलों की कुछ समझ ही नहीं है, वही तय करते हैं कि आगे कौन खिलाड़ी जाएंगे, जहां पर कई बार वो खिलाड़ी चले जाते हैं, जो योग्य नहीं थे और जो योग्य होते हैं, वह उनकी दबंगई के आगे कुछ भी नहीं कर पाते हैं। सरकार को अगर

वास्तव में भारत के खेलों की दशा सुधारनी है, तो बहुत कुछ बदलना पड़ेगा, कुछ कड़े कानून बनाने पड़ेंगे, जो तहसील स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक हो, अगर ऐसा होता है तो वह दिन दूर नहीं जब भारत खेलों में भी अपना वर्चस्व दिखाने का अपना एक अलग ही जज्बा रखेगा।

अगर स्कूली शिक्षा से हर बच्चे को खेल की शिक्षा दी जाती है, तो उसका मानसिक शारीरिक रूप से बहुत जबरदस्त विकास होने के संभावना भी बढ़ जाएगी, जिससे भारत का हर युवा अपने आप में हर क्षेत्र में सशक्त और सक्षम होकर सामने आएगा, वह व्यसन से भी दूर रहेगा, जीवन में किसी भी परिस्थिति में वह निराश नहीं होगा, और उसमें राष्ट्र के प्रति राष्ट्र भावना का भी अभूतपूर्व विकास होगा, वह जब ग्राउंड की मिट्टी से रूबरू होगा, उसमें खेलेगा तो उसकी खुशबू उसे जिंदगी भर महसूस होगी।

इसके लिए सरकार को भी कुछ कदम उठाने पड़ेंगे, वह प्रत्येक तहसील, जिला स्तर पर शारीरिक शिक्षकों की काउंसलिंग करके उन्हें प्रेरित करें कि आपके हाथों में राष्ट्र का भविष्य है, उन्हें प्रोत्साहित करके इनाम से नवाजे और ऐसे ही जब खिलाड़ी या टीम अच्छा करती है, तो उनको भी प्रोत्साहन स्वरूप विद्यालय के द्वारा सोशल मीडिया पर उन्हें हीरो की तरह आगे लाने का प्रयास करें, उससे उनमें काफी हौसला बढ़ेगा। स्कूल या शारीरिक शिक्षक अपने स्तर पर खेलों पर आधारित फिल्मों को सभी खिलाड़ियों को दिखाएं, उससे खिलाड़ियों में एक अलग ही तरह का जोश उभर कर आएगा। कोई भी काम मुश्किल नहीं होता बस उसका तरीका अगर बदल दिया जाए तो उसके परिणाम बड़े चौंकाने वाले सामने आते हैं। अगर ऐसा होता है तो कुछ ही सालों में हम एक दो नहीं बल्कि ओलंपिक जैसे आयोजनों में दस, बारह गोल्ड मेडल ऐसे ही ला सकते हैं, इसके लिए प्रयास हमें अभी से करने होंगे।

इसमें अभिभावकों का भी रोल बहुत अहम है, वह अपने बच्चों को शुरू से ही खेल भावना के बारे में बताएं, उन्हें खेलने के लिए प्रेरित करें ताकि बच्चों के साथ-साथ अभिभावकों का भी सर गर्व से हमेशा ऊंचा रहे।

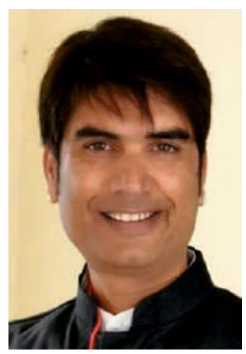

राहुल दीक्षित "RD"
कवि व साहित्यकार
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली
मो. 9461016726

फिर नई सुबह अपनों के लिए

मुंडेर पर बैठा कपोत अचानक पंख फड़फड़ाकर उड़ गया। मैंने आंगन की ओर उदास आंखों से निहारा। सांझ धीरे धीरे दीवार से उतरकर आंगन में पसरने लगी थी। अंधेरा कमरों के कोने पर अब अपने डेने फैलाने को आतुर सा दिखाई दिया। शायद इसीलिए समय की दौड़ती भागती परछांइयों को पकड़ने को दौड़ता हुआ मैं अतीत के कुहासों में ज्यों कुछ खोजने लगा। अनु और अंकित तब बहुत छोटे थे। किलकारियों से तब घर गूंजता रहता था। मम्मी की प्यार भरी डांट और पापा के लाड़ दुलार के बीच पलते बच्चे कब बड़े हो गए, पता ही न चला। अनु ससुराल चली गई। अंकित मेडिकल की पढ़ाई पूरी कर इंटर्नशिप के लिए जयपुर चला गया। मैं और शारदा चेहरों की झुर्रियों पर जीवन का सारांश लिए ढलती सांझ की कलास लिए स्वयं को इस पुश्तैनी मकान के नाम समर्पित किए रह गए। शायद अंधेरे में ये जलते दीप थे, जो हमारे लिए प्रकाश की राह बताने वाले कुछ मुट्ठी भर जुगनू थे। यादों का सैलाब अचानक यथार्थ की चट्टानों से टकराकर चूर चूर हो गया। कल राजकीय सेवा में पैंतीस वर्षों का अवसान दिवस होगा। शिक्षा की लंबी सेवा यात्रा के अनेक दीप इस उदास सांझ में मानों झिलमिला कर जल उठे।

शहर से दूर मगरों का छोटा सा गांव। पहाड़ी पर प्राइमरी स्कूल का वह टूटा फूटा भवन। लगता था, आजाद भारत की छाती पर रिसता घाव लिए प्राण अपने होने की नई परिभाषा गढ़ने को आकुल थे। वह गांव गरीबी के कितने ही दंशों के बीच शायद आजादी के मायने खोजने की कोशिश कर रहा था। इस कोशिश में चहुं ओर फैली दरिद्रता के बीच अनेक दंशों की दहशत के साथ छोटे छोटे बच्चे जब स्नेह आदर की दक्षिणा लिए आखर पाटी के साथ मेरे सामने आ बैठते, तब मैं युवा द्रौणाचार्य इन एकलव्यों के साथ कितनी कितनी देर आखर युद्ध में शर संधान करते रहता, पता ही नहीं चलता। मेरा हर तीर इनकी बुझी आंखों में नश्तर नहीं, प्रकाश का पुंज होकर विस्तारित हो जाता। तब मेरे लिए यह क्षण दीप पर्व बन जाता और लगता आजाद भारत के लिए असली लड़ाई तो अब शुरू होनी है। अब तक इस युद्ध के लिए सारे प्रयास शर संधान ही थे। बेशक वह भी जरूरी था।

बालकों की अंधभक्ति कहूं या उनके माता पिता की निष्कपट, निश्छल आशा की किरण-गांव से पदोन्नति पर हुए तबादले के पल भुलाए नहीं भूलते। आंसुओं की गंग यमुन धारा में जैसे स्कूल का कण कण डूब गया था। परिवार से छूटने की सी वेदना लिए मैं अपने दोनों बच्चे व पत्नी के साथ समीप के गांव के उच्च प्राथमिक स्कूल में आ गया। दीपक की लौ में लगा, थोड़ा और प्रकाश आ गया। एक शिक्षक के आखर युद्ध का एक और बड़ा अध्याय जैसे खुल गया था।

बच्चों के लिए यह स्कूल पहले से अच्छा था। इस मायने में कि यहां पढ़ने लिखने के साधन अपेक्षाकृत अच्छे थे। कक्षाएं थीं, खेल मैदान, फर्नीचर, पर्याप्त शिक्षक, भौतिक सुख सुविधाएं, लेकिन अब तक की 10 वर्ष की सेवा में लगता था, कहीं कुछ पीछे छूटा जा रहा था- क्या था वह- कोई संवेदन का तंतु जो गुरू-शिष्य के बीच टूटा तो न था, शिथिल जरूर होता जा रहा था। बल्व का प्रकाश अचानक जो भभक रहा था, जरूर कुछ टूटने का पूर्वाभास था। गांव विद्यालय के नज़दीक तो आ रहा था, लेकिन ये नज़दीकियां परस्पर आस्थाओं के विघटन और अविश्वास की छाया से संघनित सी होती प्रतीत हो रही थीं। शिक्षा की अलख जगाए रखने की मेरी जिजीविषा तब और प्रखर सी होने लगी। तब शिक्षा को समाजोन्मुख बनाने की कवायद का युग था। कुछ प्रकाश बाहर जा रहा था, कुछ अंदर आ रहा था। सच कहूं तो वह शिक्षा के परिदृश्य को

बदलने वाला उषःकाल था। आजाद भारत के अहसास का पल जो मैंने किताब और मस्तिष्क के बीच चल रही जंग के बीच एक शिक्षक के सेनापति होने के अनुभव के रूप में मैंने पाया था। बच्चों के जिज्ञासु चेहरों पर उम्मीदों की आजादी का ज्यों एक प्रकाश हां दमकता दिखायी दे रहा था। हां,पाठ्यक्रम पहले से अधिक गहन और पाठकों की पीठ पर लदे बस्ते का बोझ और अधिक बढ़ता जा रहा था।

अचानक भावोद्वैग की गंगा किसी किनारे से टकराकर उछली और फहर गयी। कमरे की रोशनी जलाकर शारदा-मेरी सहधर्मिणी चाय का कप लिए सामने खड़ी थी। उम्र की चढ़ती बढ़ती रेखाओं के बीच रजत केश राशि से घिरे उस उदास चेहरे पर जीवन जीने की ललक, उदग्रता अब भी नज़र आ रही थी। यही तो कुछ था, जो घिर आ रहे अंधेरे के बीच प्रकाश की उद्दाम किरणवत् मुझे आगे बढ़ने का सदा हौंसला देता रहा था। सोचने लगा, मध्यमवर्गीय जीवन जीने वाले एक कर्मचारी के संघर्षशील जीवन का पाथेय क्या है- उसका परिवार और विशेषकर मेरे वे अपने जो संवेदनाओं के विस्तार की इस यात्रा में सहगामी बने रहे। सेवानिवृत्ति की इस पूर्व संध्या में शारदा के प्रति मेरी कृतज्ञता का समस्त भाव आंसू की दो बूंद बनकर गिर गया। उम्र के इस पड़ाव में क्या यह मेरे जीवन का उत्तरार्द्ध है या आजादी के नए विहान का शुभारंभ? मैं कमरे की दूधिया रोशनी में जैसे फिर दीपावली के दीप खोजने लगा।

दूर कहीं डूबती शाम को और भी उदास करती मंदिर की घंटियां कानों में रस घोलने लगीं। इस रस में शुरूआती अध्यापकीय जीवन की भावमयी स्मृतियां थीं, स्कूलों की जीवंत किलकारियां थीं, आजाद भारत की भावी पीढ़ी को तैयार करने की संकल्पबद्धता थी और गुरू शिष्य संबंधों की गुड़ पगी वे लड़ियां थीं जो पैंतीस वर्ष की शिक्षा यात्रा में विश्राम लेकर फिर नए दायित्वों की ओर मुझे दिशा दर्शित करना चाह रही थीं।

आज किनारे पर खड़े किसी यायावर की भांति तटस्थमना हो जब सोचने लगा तो बोध हुआ कि आजादी के बाद विकास की गंगा के प्रवाहन में शिक्षा जगत् को क्या न मिला- सुसम्पन्न विद्यालय, उत्कृष्ट पाठ्यक्रम, बालकों को लुभाने के लिए उत्तम सहायक सामग्रियां, उच्च वेतनमान। सब कुछ होने पर भी जुड़ाव व संवेदना के धरातल पर जो बिखराव, वितृष्णा, अनाकांक्षा, अकार्य संस्कृति हमें विरासत में मिली, उसके लिए जिम्मेदार कौन? और पुनः अनजाने में ही जो टूटता लग रहा है, उसे जोड़ने का मुझ शिक्षक का रोडमेप क्या?

एक अपराध बोध मुझे फिर मन के इर्द गिर्द अंधेरों में धकेलने लगा। यह कष्ट उस समाज के प्रतिनिधि होने के नाते था, जिसका मैं भी एक हिस्सेदार था। सेवानिवृत्ति की पूर्व संध्या में पुत्री का ससुराल में सुखी होना, बच्चे का उच्च पदस्थ हो जाना और पत्नी की आंखों में महसूस किया अपार आत्म संतोष-अंततः इस खुशनुमा पारिवारिक विरासत के बदले जो बदरंग संस्कार सेवा के मार्ग पर पनपते मैंने देखे, लगता है, उनके लिए प्रायश्चित का कोई मार्ग नहीं। यह गुलामी और आजाद भारत की दहलीज पर खड़े एक शिक्षक का सोच था।

लगता था, दीपक के नीचे का अंधेरा दीपक को घेरने लगा। रात के सन्नाटे में बाहर गलियों में भौंकते कुत्तों की आवाजें, चिकमिक चिकमिक झींगूरों का स्वर और कहीं दूर निरभ्र आसमान में टिमटिमाते सितारे। बच्चे कल आने वाले हैं। ये दीप मालाएं ही अब मेरा संबलन हैं। सब कुछ वैसा ही तो है। शिक्षक कर्म के वे शुरुआती साल-तब अंधेरा संतोष और आनंद की गहरी सुखकारी नींद देता था। आज नींद क्यों नहीं आती? हां, एक फर्क था तब और आज में। तब मेरे सपनों में अकेला मैं था। फिर उन सपनों में मेरी सहगामिनी आ खड़ी हुई और अब मेरे दोनों बच्चे और नाती पोते। और ये ही क्यों? एक स्वतंत्र चेता शिक्षा सेवी जो शिक्षानुष्ठान में उस वृहत् शिक्षा समाज में अब स्वतंत्र, सोच सकता है, स्वतंत्र कर सकता है और उस प्रतिफल को सुखपूर्वक भोग सकता है, जो मेरे अपनों के बीच मुझे अब मिलना है।

आज लगता था, अंधेरे में महसूस की जा रही ये मेरी अपनी वे दीपमालाएं हैं, जो मुझे हर समय जीवित और प्रकाशित रखेंगी। ये अहसास देती रहेंगी कि मेरा अतीत, वर्तमान और भविष्य इन्हीं से प्रकाशित होता रहेगा। संतोष और संकल्प से भरी आंखों में सुख भरी नींद झपझपाने लगी। कल फिर एक नई सुबह मेरे अपनों के लिए।र

डॉ. राकेश तैलंग
पूर्व शिक्षक व शिक्षाधिकारी
श्री द्वारकाधीश मंदिर मार्ग, कांकरोली
मो. 9460252308

कवर स्टोरी

आजादी की पुन :र्व्याख्या

देश 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ। यह बात देश के लगभग सभी नागरिकों को पता है जिससे वे बड़े उत्साह और आनंद से इस पर्व को मनाते हैं। मनाना भी चाहिए क्योंकि यह हमारी आजादी का उत्सव है। इस दिन देश के कई महान संघर्ष शील लोगों के हिंसक और अहिंसक प्रयासो के बाद गोरे लोगों से काले लोगों में सत्ता हस्तांतरण हो पाया। उसके बाद ही देश के लोग देश के लिए कानून बनाने लगे, अपनी व्यवस्था को कायम की, पर आज एक कवि अदम गोंडवी की एक कविता याद आती है की सौ में से सत्तर आदमी जब तक नाशाद है रखकर दिल पर हाथ कहिए देश क्या आजाद है?

यह कविता व्यवस्था पर आज भी बड़े प्रश्न खड़े करती है। क्या सचमुच में हम आजाद है? या केवल आजादी के नाम पर कोई दिवा स्वप्न तो नही चल रहा है। यह एक बहुत बड़ा विचारणीय बिंदु है। अगर आजाद है तो यह जो हालात हम देख रहे है उसका जिम्मेदार कौन है। क्यों गांव का गरीब, गरीब ही रहा और पूंजीपतियों के धन में इजाफा होता गया। आम जीवन में देखा जाए तो व्यक्ति का खुद का कुछ भी नहीं है। सुबह उठने से लेकर रात सोने तक एक दैनिक दिनचर्या पर नजर डाली जाए तो आज मल्टीनेशनल कंपनियों को झकड़न में इतना झकड़ चुका है की अब वो संभव भी नही है की उससे बाहर निकल पाए। सुबह की चाय से लेकर रात के डिनर तक, टूथ ब्रश से लेकर सेंपू साबुन, कपड़े लते, जूते मौजे,ऑफिस सामग्री से लेकर विभिन्न चीजों का ऐसा गुलाम है की उसे उसी में अपनी आजादी नजर आती है। उस वास्तविक उन्मुक्तता को व्यक्ति कभी जी भी नही पाया है।

मेरे विचारों से लगेगा की देखो मै कैसी विकास विरोधी बात कर रहा हूं जबकि दूसरी तरफ वो बात भी कर रहा हूं जो हमारी अविकसितता को दर्शाती है। की गरीब लोगो के पास खाने को नहीं है, कपड़े नही है मकान नही है वगैरा वगैरा। हा यह द्वंद तो है पर सही समय मूल्यांकन का भी यही है की विकास कैसा होना चाहिए। मैं मानता हूं की विकास होना चाहिए बेशक देश के लोगों को खाना मिले, छत मिले पर वो छत आपको बड़े डेम, बड़ी सड़क, बड़े शहर बड़ी रेल्वे बड़ी फैक्ट्री की आड़ में विस्थापन के नाम पर मिले जिससे हजारों लाखों लोगों को अपनी जड़ों से कटना पड़े तो शायद में इसको बड़ा मूर्खतापूर्ण निर्णय मानता हूं।

ऐसा ही एक विस्थापन जिले में टाइगर प्रोजेक्ट के नाम पर,गरीब आदिवासी जनता को थोपा जा रहा है जिसमे कई लोग विस्थापित होंगे। ओर वे अपनी जड़ों से कट जायेंगे, और वे भी प्रकृति से दूर होकर बाजारवाद के भौतिकवाद के शिकार हो जायेंगे।हमारी भाषा में कहे तो वे भी विकसित हो जाएंगे, जबकि प्रकृति केवल उच्चतम लोगों के लिए केवल एक मनोरंजन का साधन बनकर रह गई है। उसमे घूमो फिरो आनंद लो बाकी उसके वास्तविक जुड़ाव से कोई लेना देना नही है। ओर जिनका लेना देना है पूरा जीवन ही प्रकृतिमय है। उनको वहा से तोड़कर कर बाजार वाद की भेंट चढ़ाना है।

हम जिस अंग्रेजियत का विरोध कर उनसे लड़ झगड़कर अलग हुए, परन्तु दुखद यह है की उसी अंग्रेजियत में आज हम इतने डूब गए की अब एक किसान के बेटे को गोबर के हाथ लगाने में शर्म के मारे मर जाता है। वो अपने आप को इतना हीन समझने लगता है की खेती किसानी या श्रम करना कोई अपराधिक काम हो वैसे । क्या इसके लिए हमारी शिक्षा व्यवस्था जिम्मेदार नहीं है ? बहुत कुछ लिखा जा सकता है हर एक व्यवस्था पर परंतु आज इतना ही ।

सत्ता, मीडिया, उद्योगपति और पूंजीपति लोगों ने अपने हिसाब से लोगों को आजादी के रूप में परिभाषित कर रखा है। और उसी अंधी दौड़ में दौड़कर लोग जिसका भरपूर विरोध कर रहे थे उसके पक्के गुलाम हो गए। ओर उस गुलामी को ही सर्वेसर्वा मान लिया। इन्ही लोगों की कठपुतली बनकर लोग रह गए। लोगों के माइंड सेट को सेट करने के लिए लाखों करोड़ों खर्च कर मानसिक गुलाम बनाया जाता है। ताकि एक बहुव्यापी उपभोक्ता उनके बाजार को जिंदा रख सके उसी बाजार को सत्ता अपने पोषण देती रहे और मीडिया उस मीठे जहर को अमृत बता कर ऐसे परिभाषित करती है जैसे इससे बढ़िया कुछ भी नही है। ओर पूंजीवाद अपने गुलामों का भरपूर लुफ्त उठाती है।

बस आज जरूरत है तो आजादी की पुनःर्व्याख्या की है की हमारी आजादी हो कैसी हो? जिसमें सुकून से जिया जाए।

गोपाल शर्मा
साहित्यकार, कुंभलगढ़

मरम्मत में बिजी हैं, साहब...

साहब नहीं मिल सकते, मरम्मत में बिजी हैं। किसकी मरम्मत, कौनसी मरम्मत, कैसी मरम्मत? साहब, आए दिन किसी न किसी की मरम्मत कर सुकून पाते हैं। दो-चार दिन मरम्मत न करें, तो सुकून का कीड़ा काटने से मना कर देता है। साहब का अपना तरीका है। वे फाइल देखते हैं, फिर फाइल कौन देखता है, उसे देखते और फिर बुला भेजते हैं। जैसे ही बाबू कमरे में दाखिल होता है, साहब बड़े प्यार से कुर्सी ऑफर करते, फिर चपरासी को बुलाकर आदेश देते- जाओ दो चाय पेशल लेकर आओ। तुम्हें पीना हो तो अपने लिए भी लेते आना। बड़ा खयाल रखते मातहतों का।

साहब बड़े ही नरम और शालीन तरीके से बात रखते। परिवार कैसा है, बच्चे पढ़ रहे हैं? उनके कॉलेज की फीस बराबर जा रही है या नहीं? ऑफिस से घर जाते समय सब्जी के साथ केले ले जा रहे हो कि नहीं? देखो बच्चों की सेहत के लिए केला सबसे बढ़िया फल है। एक दर्जन केले में पूरा परिवार समा जाता है। तुम्हारी जितनी तनख्वाह है उस हिसाब से केले सबसे ज्यादा फायदेमंद हैं। इस ऑफिस में सब्जी के साथ बच्चों के लिए केले नहीं ले जा सके तो लानत है। जब फाइल से केले का खर्च निकलना बंद हो जाए तो उसे बंद कर देना चाहिए।

साहब बहुत मीठे हैं, इसलिए उनके पास बार-बार जाने से टेंशन होता है और उस टेंशन से बाबुओं को बी पी और शुगर फोकट में नियामत के रूप में मिल जाती है। फाइल मरम्मत के साथ-साथ कार्यालय की हर चीज का ध्यान रखते। ये सब कार्य साहब के साइन से सम्पन्न होते। चौथे शनिवार को मरम्मत कार्यों की समीक्षा की जाती। यह समीक्षा मीटिंग हॉल में सम्पन्न की जाती है, जिससे सबकी मरम्मत एक साथ हो सके। इसमें सभी नई फाइलों को चिन्हित किया जाता एवं उनसे प्राप्त व्यक्तिगत राजस्व की गणना साहब अपने कमरे में बैठकर करते।

महिलाओं को फाइलें नहीं दी जातीं। महिलाएं फाइल पचाने में असमर्थ होती हैं, ऐसा साहब का मानना है। उन्हें दूसरे कार्य सौंप दिए जाते हैं, लेकिन सब्जी के साथ केले ले जाने की आवश्यकता का पूरा ध्यान रखा जाता। कटी-फटी और बंद फाइलों की जानकारी सभी को देना होती। बंद फाइलों का अर्थ जिनसे अब दाम आने की उम्मीद नहीं है। महत्वपूर्ण फाइलों की मरम्मत हर माह की जाती। साहब का कहना है- निर्माण से उतना (व्यक्तिगत) राजस्व प्राप्त नहीं होता, जितना मरम्मत से मिलता है। आज तक मरम्मत की फाइल पर जांच कमेटी नहीं बैठी। साहब नये काम के ठेके की फाइल की बजाए पुराने काम की मरम्मत की फाइलों पर ज्यादा ध्यान देते।

साहब साल में दो बार फाइलों की मरम्मत करते। यह मरम्मत पूरे साल चलती। एक दिन में सभी फाइलों की मरम्मत कर दी तो साल भर क्या करेंगे? केले तो साल भर खाए जाते हैं।

बहरहाल....नए ठेकेदार की मरम्मत हो रही है। मरम्मत की आवाज बाहर नहीं आती। जो जानकार और भुक्तभोगी हैं, वे अंदाजा लगा लेते हैं। पिछले दिनों इन ठेकेदार महोदय को निर्माण का ठेका दिया। इन्होंने ऐसा निर्माण किया जो साहब के रिटायरमेंट से पहले गिरने वाला नहीं था। साहब की वाणी पी ए के कानों में गूंज रही थी। साहब कभी किसी पर गुस्सा नहीं करते। हमेशा मलहम लगाते हुए बात करते हैं। यहीं कारण है कि उनके शब्द दुखी कम करते हैं और कचोटते ज्यादा हैं। आदमी सोते समय भी शब्दों की मार से छटपटाता, बिलबिलाता है और अपने प्यारे की कसम खाता है, अगली बार ऐसा नहीं करुंगा।

साहब ने ठेकेदार से कहा-आपसे निर्माण करने के लिए कहा था, यह नहीं कहा था कि, हमारा निर्वाण कर दो। निर्माण में मरम्मत की गुंजाइश ही न रहे। व्यक्ति इनवेस्ट इसलिए करता है, उसका ब्याज जिन्दगी भर खा सके और पूंजी सलामत बनी रहे। इस निर्माण से तो हमारा निर्वाण भी ढंग से नहीं हो पाएगा। कुछ ऐसा कीजिए, जिससे इस निर्माण में मरम्मत का कार्य निकल सके और निर्माण कार्य से हमारा निर्वाण होने से बच जाए। इसमें मरम्मत का कार्य तब तक चलना चाहिए, जब तक हम रिटायर नहीं हो जाते। सब्जी के साथ केले घर ले जाने की व्यवस्था से सभी खुश थे। सभी निर्माण से निर्वाण की ओर मोक्ष पाने की लालसा में फाइलों की मरम्मत में पूरे समर्पण के साथ जुटे रहते। बॉस की खुशी में सबकी खुशी है।

सुनील जैन राही
वरिष्ठ साहित्यकार, दिल्ली
मो. 9810960285

पत्थर के इंसान

ऊपरवाला भी अजीब खिलाड़ी है, किसी को नज़र ही नहीं देता दुनिया का नज़ारा देखने की, उनको कुछ भी दिखाई नहीं देता, धन दौलत, सोना चांदी के अंबार की ऊंची दीवारें उनको कैदी बनाए रखती हैं। मिलता है इतना कि कोई हिसाब नहीं, मगर सबका सही इस्तेमाल कैसे करना है, उनको सुझता ही नहीं। मिट्टी से खेलते तो मिट्टी की खुशबू का पता होता बेजान धातुओं का रंग होता है, चमक होती है। कोई खुशबू नहीं होती है। जब संवेदनाएं ही नहीं होती, तब बदन आदमी औरत का होने पर भी आत्मा रूह उसमें बचती रहती। नहीं बस चाहतें ख़त्म नहीं होती, ज़िंदगी का ख़ालीपन मौत तक भरता नहीं है। बादशाह शासक अमीर पैसे और ताकत वाले लोग दुःख दर्द को जानते ही नहीं, इंसानियत उनको छोड़ चली जाती है, जो सिर्फ और सिर्फ खुद की खातिर अधिक से अधिक जमा करते रहते हैं। कोई शाहजहां की तरह अपनी महबूबा को ताजमहल से कीमती उपहार जीवन में देकर समझता है, उससे महंगा इश्क़ कोई इस दुनिया में शायद ही करेगा। अब प्यार मोहब्बत इसी तरह दौलत के तराज़ू में तोलते हैं, अन्यथा दिल विल, प्यार व्यार अमीर लोगों को कभी किसी काम की चीज़ नहीं लगती है। आधुनिक अर्थव्यस्था में पुराने ज़माने की चाहत को नासमझी नादानी मानते हैं। इतनी फुर्सत किसे है, कौन किसी का इंतज़ार करें, दिल को बेकरार करें, व्यापार करें, कारोबार करें, एक को, दो को, चार सौ को हज़ार करें।

ईश्वर ने सब कुछ बनाया है, सबकी आवश्यकताओं की पूर्ति को बहुत है, लेकिन किसी की अथवा कुछ लोगों की हवस को पूर्ण करने को धरती आकाश क्या पाताल तक कम पड़ते हैं। इंसान बस माटी का खिलौना है, माटी से बनना माटी में मिलना है, लेकिन बदनसीब होते हैं, जिनको माटी क्या, क़फ़न तक नसीब नहीं होता। आखिर में चाहे इस जिस्म को कितने सुंदर शानदार, महंगे लिबास पहनाओ, जितना चाहे भरपेट खाओ। हर चीज़ की सीमा होती है, उपयोग की उससे अधिक का इस्तेमाल बर्बादी कहलाता है। बड़ी शान वाले बर्बादी को भी समझते हैं, उनकी बड़ी औकात है। ये कुछ ऐसे बेदर्द लोगों की सच्ची बात है, लोग प्यासे हैं उनके घर पैसों की बरसात है। अपनी नेक कमाई से नहीं तमाम अन्य की हिस्से की सभी चीज़ों की लूट और छीनकर हासिल की धन दौलत से झूठी शान ओ शौकत की ज़िंदगी जीना किसी धर्म में उचित नहीं बतलाया गया है। ईश्वर जिनको अधिक देता है, उनको बांटना होता है, उनको जिनके पास कुछ भी नहीं है।

रहीम और गंगभाट का संवाद :

इक दोहा इक कवि का सवाल करता है और इक दूसरा दोहा उस सवाल का जवाब देता है। पहला दोहा गंगभाट नाम के कवि का जो

रहीम जी जो इक नवाब थे और हर आने वाले ज़रूरतमंद की मदद किया करते थे से उन्होंने पूछा था-

सीखियो कहां नवाब जू ऐसी देनी दैन
ज्यों ज्यों कर ऊंचों करें त्यों त्यों नीचो नैन।

अर्थात नवाब जी ऐसा क्यों है, आपने ये तरीका कहां से सीखा है कि जब जब आप किसी को कुछ सहायता देने को हाथ ऊपर करते हैं, आपकी आंखें झुकी हुई रहती हैं।

रहीम जी ने जवाब दिया था अपने दोहे में :-

देनहार कोउ और है देत रहत दिन रैन
लोग भरम मो पे करें या ते नीचे नैन।

अर्थात देने वाला तो कोई और है। ईश्वर है, जिसने मुझे समर्थ बनाया, इक माध्यम की तरह, दाता तो वही है, पर लोग समझते कि मैं दे रहा हूं, तभी मेरे नयन झुके रहते हैं। आज तक किसी नेता ने देश या जनता को दिया कुछ भी नहीं, सत्ता मिलते ही शाही अंदाज़ से रहते हैं और गरीबी का उपहास करते हैं। कुछ लोग जो किसी तरह से धनवान, रईस, साहूकार बन गए, उनको देखते हैं तो आडंबर पर पैसा बर्बाद कर गर्व का अनुभव करते हैं, जो वास्तव में देश धर्म को समझते तो शर्म की

बात लगती। उस पर कुछ धन दान देकर ढिंढोरा पीटते हैं, बिना ये सोचे, समझे की वो सब हासिल कैसे किया गया है।

ये नहीं आदमी, न हैं ये कोई भगवान, इनकी कुछ और ही है पहचान, इनसे डरते हैं इंसान, इनसे घबराते हैं दुनियाभर के सभी शैतान। दुनिया होती है हैरान देख देख इनके परिधान। लगते हैं चमकता सोना, सजे हैं हीरे जवाहरात मोती, लेकिन हैं कोयले की खान। बस ये हैं चलती फिरती बाज़ार की इक दुकान। बिका हुआ है जिनका सबका सब भीतर का सामान, कोई दिल नहीं, कोई धड़कन नहीं, कुछ भी नहीं इनको होता कभी एहसास, बस कोई मशीन हैं, जैसे रहना बचकर ख़तरा बड़ा है इनके पास। पागलपन की बात मत पूछो दिन लगते हैं इनको रात, चैन की नींद ज़िंदगी का सुकून लगते हैं इनको, कोई बकवास इनको नदियां और समंदर लगते हैं। ख़ुद से छोटे बुझती नहीं कभी इनकी गहरी प्यास। ज़िंदा नहीं, रूह नहीं है इनमें, मरना फिर भी लाज़िम होगा। चाहतें हैं शाहंशाह जैसा, आख़िरी अपना अंदाज़, क़फ़न सिला हो सोने का जिस्म भी उनका बेशकीमती बन जाए भले ही राख। प्यार मोहब्बत ये नहीं समझते, लेकिन अजब है इनकी कहानी खुद ही ताजमहल बनवाना है, कहलाना है इक महादानी इनकी सोच पर होगी हैरानी, इनको अभी धन दौलत जमा करनी है, अज्ञानता की सीमा तक दौड़ना है, मृगतृष्णा में नज़र आता है रेत भी चमकती जैसे पानी। पढ़ी थी बचपन में इक कहानी- इक था राजा, थी और इक रानी। कठपुतली का खेल था, शतरंजी चाल थी, सोलह बरस की उम्र भी अभिलाषा सौ साल की तकदीर का था। भरोसा आखिर ज़िंदगी दे गई, धोखा बीच सफ़र में नैया डूबी, सब कुछ था नज़र के सामने, सभी लोग खड़े थे दूर किनारे, हाथ भी छूटे, आस भी टूटी, किसको, कौन, क्या पुकारे ? सभी सहारे इस जीवन की बाज़ी को जीता कोई नहीं सभी हारे।

आज़ादी मिली संविधान सबको बराबरी का हक़ देने की बात करता है , अजब लोकतंत्र है कोई महलों में कोई झौंपड़ी भी नहीं फुटपाथ पर रहता है । गरीब आदमी इस ज़ुल्म को ख़ामोशी से सहता है , सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान कहां है इक शायर कहता है । ये कैसा विधान है कुछ घरों के पास आधा जहान है जिसको आप नाम देते हैं शानदार गर्व करते हैं आधी आबादी को मिलता आखिर दो ग़ज़ ज़मीन जहां क़ब्रिस्तान है । आपको महल किसी की निशानी लगते हैं जो वास्तव में ज़ुल्मों की कोई एक नहीं कितनी दास्तानें होते हैं खंडहर होना ही है इक दिन । इतिहास झूठा भी होता है हक़ीक़त सामने नहीं दिखाई देती तब भी कोई शायर साहिर लुधियानवी कोई नज़्म ताजमहल लिख कर वास्तविकता उजागर कर देता है । हुए मर के हम जो रुसवा , हुए क्यों न गर्क़ ए दरिया । न कभी जनाज़ा उठता , न कहीं मज़ार होता । ग़ालिब कहते हैं कि रुसवाई होती है मरने बाद लगता है कैसे शख़्स थे क्या करना था क्या करते रहे ज़िंदगी भर रोज़ जो लोग मरते रहे । धनवान लोगों ने शासक वर्ग राजनेताओं प्रशासन सभी ने देश को बर्बाद किया है इल्ज़ाम दिया है कि जनसंख्या अधिक है सदियां लगेंगी सब बनाने में , ये झूठ है कभी कोशिश ही नहीं की जाती जो लोग नीचे हैं पीछे हैं उनको ऊपर लाने आगे बढ़ाने की क्योंकि उनकी शान शौकत गरीब को और गरीब बनाने से ही बनी रह सकती है।

डॉ. लोक सेतिया
एससीएफ 30, मॉडल टाउन
फतेहाबाद, (हरियाणा) 125050
मो. 9416792330

राखी भेजवा देना

बहन, राखी भेजवा देना,
अबकी मैं ना आ पाऊंगा।
काम बहुत हैं ऑफिस में,
मैं छुट्टी ना ले पाऊंगा।।

कलाई सुनी ना रहें मेरी,
तुम याद ये रख लेना।
अपने भाई के पते पर,
राखी तुम भेजवा देना।।

ये महंगाई है सबपे भारी,
फिर भी राखी भेजवाना।
गर पूछे भांजी भांजा तो,
उन्हें मामा का प्यार कहना।।

राखी पर ना मेरे आने से,
तुम मुझसे ना रूठ जाना।
हाथ जोड़ कर रहा निवेदन,
राखी जरूर भेजवा देना।

भेज रहा राखी उपहार संग,
चिट्ठी में प्यार के दो बोल।
माफ करना अपने भाई को,
मना न सका पर्व अनमोल।।

राह देख अबकी तुम मेरी,
राखी थाली सजा ना लेना।
मेरे छुट्टी का है बड़ा झंझट,
भेज राखी तुम फर्ज निभाना।

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, जौनपुर, (यूपी)
पिन 222129, मो. 8367782654
व्हाट्सअप 8792257267.
ईमेल ankur3ab@gmail.com

नज्म - वतन

सहन ख़ूबसूरत, चमन ख़ूबसूरत
मुक़म्मल है मेरा वतन ख़ूबसूरत

नज़र आए प्यारा, तिरंगा जो नभ में
लगे बा-ख़ुदा, ये गगन ख़ूबसूरत

मिसाल अपनी देकर, कहे सारी दुनिया
है हिन्दोस्तां में, अमन ख़ूबसूरत

वो भटके हुऐ, चंद को छोड़कर के
सभी के यहाँ हैं, ज़हन ख़ूबसूरत

लगाते हैं जो नारा-ए-हिन्द मिलकर
तो लगते हैं वो, सारे जन ख़ूबसूरत

कहीं दश्तो-सेहरा, कहीं पर हिमाला
कहीं अर्ज़े-गंगो-जमन ख़ूबसूरत

हमा-वक़्त याँ, मौसमे-ख़ुश-मिजाज़ी
सजे मुख़्तलिफ़, अंजुमन ख़ूबसूरत

कभी ईद, होली, है क्रिसमस की ख़ुशियाँ
शबद का कहीं, कीर्तन ख़ूबसूरत

बुलाते मुअज़्ज़िन अज़ाँ दे के हमको
लुभाते कहीं पर, भजन ख़ूबसूरत

तरक्की करे मुल्क़, इसके लिए है
हरिक नागरिक की, लगन ख़ूबसूरत

वतन की ग़ज़ल, नज़्म, दोहे, हैं उम्दा
तो छंदो में है, मनहरन ख़ूबसूरत

उरूज़ आदमियत, ने पाया तभी याँ
है इंसानियत की, फबन ख़ूबसूरत

ऐ हिन्दू, मुसलमाँ, ऐ सिक्खो-ईसाई
बनो तुम मुहिब्बे-वतन, ख़ूबसूरत

लड़ा तुमको पाए, न दुश्मन कभी भी
रखो मन में तुम, हुस्ने-ज़न ख़ूबसूरत

बने फिर से दुनिया, का उस्ताद भारत
करो ऐसा चिंतन-मनन, ख़ूबसूरत

हनीफ़ इस वतन की, सना जब भी की है
तो आया है लुत्फ़े-सुख़न, ख़ूबसूरत

शेख़ मुहम्मद हनीफ़ रज़वी
काव्य गोष्ठी मंच
कांकरोली (राजस्थान)

देश के लिए जियो, देश के लिए मरो

हो अगर भारत की संतान, देश हित में काम करो।
देश के लिए जियो, देश के लिए मरो।
हिंदू,मुस्लिम,सिक्ख, ईसाई, बन के न संग्राम करो।
मानवता के पथ पे चल, हिन्द का तुम नाम करो।
वजूद अपना है तिरंगा, उसका तुम सम्मान करो।
अपने तन, मन में तुम, बस केवल इसे धरो।
हो अगर भारत की संतान, देश हित में काम करो।
देश के लिए जियो, देश के लिए मरो।
देश की ही शान में, सैनिक सीमा पर लड़ रहा।
माटी के क़र्ज़ ख़ातिर, घर से वो बिछड़ रहा।
उन लड़ने वाले सैनिकों का, न कभी अपमान करो।
जहां भी मिले तुम्हें, बस केवल प्रणाम करो।
हो अगर भारत की संतान, देश हित में काम करो।
देश के लिए जियो, देश के लिए मरो।

जितेन्द्र पालीवाल
काव्य गोष्ठी मंच, कांकरोली

मातृभूमि की बलिवेदी पर

आंख उठाने न पाये अरि,
प्यारी मातृ भू हिन्द पै।
शौला बन भड़केगा जब,
उठेगी दुनिया भय से।

भड़के या डरे दुनिया,
वीरों अब चढ़ते चलो।
मातृ भूमि की बलिवेदी पर
निज तन तजते चलो।।

गांधी-सुभाष की भू पर,
लहराए तिरंगा शान से।
हम सब भारतीय एक हैं,
हटेगा दुश्मन मैदान से।।

हटे या न हटे अरि,
मैदान शमशान बनाते चलो।
मातृभूमि की बलिवेदी पर
निज तन तजते चलो।।

हंसते हंसते प्राण गंवा कर,
हो गए अलविदा जहान से।
हो शत् शत् प्रणाम उन्हें,
जो बंध छुडाये भांकर से।

हो गया स्वतंत्र हिन्द,
अब स्वतंत्रता पहचानते चलो।
मातृ-भूमि की बलिवेदी पर
निज तन तजते चलो।।

धनसुखलाल बोल्या
कांकरोली, राजसमंद

jaivardhannews.com
जयवर्द्धन NEWS

विवाह की अनंत कथाएं

भविष्य में जब कभी भी 21वीं सदी के महान क्रांतिकारी परिवर्तन की चर्चा होगी, तो उसमें अंबानी पुत्र के एकल से युगल बनने की घटना को प्रमुखता से याद किया जाएगा। विभिन्न काल अवधि में प्री वेडिंग, मेंहदी आदि रस्मों से लेकर वरमाला, मंगलसूत्र तक चलने वाली सतत प्रक्रिया के तहत वैवाहिक कार्यक्रम कई मायनों में अहम रहा। बेरोज़गारी और महंगाई के बीच जनता को कुछ सुखद दिखा अथवा दूसरे शब्दों में कहें दिखाया गया तो वह था अंबानी पुत्र का दीर्घकालिक पावन परिणय महोत्सव। लोकतांत्रिक आर्यावर्त में राजसी परिणय की इस परिघटना से संपूर्ण चराचर आह्लादित हो गया।

न्यूज़ चैनलों पर महीनों से प्रसारित हो रहे इस वैवाहिक उत्सव के विशेष कार्यक्रम ने रामानंद सागर कृत रामायण और बी आर चोपड़ा कृत महाभारत के दर्शकों की संख्या को पार कर टीआरपी बटोरने का प्रयास किया। दुल्हा-दुल्हन के नृत्य, रूप सज्जा, आगंतुकों से लेकर घोड़े हाथियों एवं गैर मनुष्यों के लिए बनाए गए पाक पकवान पर भी अति व्यस्त न्यूज चैनलों को घंटों कवरेज का मौका मिल गया।

शिव और शक्ति के वैवाहिक उत्सव में भूत-पिशाच,यक्ष गंधर्व आदि बाराती झूमकर नाचे थे कुछ उसी तरह का नज़ारा इस अनंत विवाह में देखने को मिला, जिसमें साधु, संन्यासी, खिलाड़ी, उद्योग पति,नेता अभिनेताओं का हुजूम झूमते हुए दिखाई दिया। सदी के इस महान वैवाहिक महोत्सव में आश्चर्यजनक घटनाएं भी देखने को मिला। वर के पिता की अमीरी का मुक्त कंठ से विरोध करने वाले महामानव भी मुस्कुराते और कमर हिलाते हुए दिख गये। न्यूज़,मीम्स, रील्स के अलावा दूल्हे का पशु प्रेम, दूल्हा- दुल्हन की प्रेम गाथा,संस्कारी वर,वर की माता का एक दिवसीय ख़र्च,दुल्हन का लहंगा आदि महत्वपूर्ण शीर्षकों के साथ अखबार की सुर्खियों में रहने वाले अनंत विवाह की खबरों से देश की अन्य समस्याओं को समाचार बनने का मौका ही नहीं मिला फलस्वरूप चारों ओर हर्ष और उल्लास का आलम देखा और दिखाया गया।

देवताओं से लेकर अमीर-गरीब मानव जाति तक में संपन्न होने वाला वैवाहिक कार्यक्रम ऐसा विधान होता है जिसमें हर किसी को खुश कर पाना संभव नहीं होता। स्वयं महादेव और शक्ति के विवाह से उनके ससुर दक्ष नाराज थे। मध्यमवर्गीय परिवार में होने वाले शादी में ऐसे रिश्तेदार नाराज़ होते हैं, जिन्हें निमंत्रण नहीं दिया हो और जो निमंत्रित भी होते हैं, यदि उन्हें तवज्जों नहीं मिलता तो विधि-विधान और भोज-भात में मीन मेख निकालने की नैतिक जिम्मेदारी उठा लेते हैं।

यदि सब कुछ सामान्य रहा तो शादियों में मुंह फुलाए रखने का कापीराइट जीजा और फूफा जैसी प्रजाति के पास तो होता ही है। अब शीर्ष धनाढ्य मानव का विवाह भला इस परंपरा से कैसे अछूता रह सकता है। अनंत विवाह में जीजा और फूफा की भूमिका निभाई है उनके उपभोक्ताओं ने जो खुले आम उनको कोसते हुए यहां तक कह रहे हैं कि रिचार्ज प्लान की कीमतों को बढ़ा कर शादी का खर्च निकाला गया है।

अरे भाई शादी ब्याह में थोड़ा बहुत बाएं-दाएं तो चलता ही है। बहरहाल महीनों तक चलने वाली इस शादी और वर्षों तक होने वाली चर्चा के लिए कुछ तो लोग कहेंगे... लोगों का काम है कहना...।

विनोद कुमार 'विक्की'
वरिष्ठ साहित्यकार
बिहार, मो. 7765954969

www.rkcl.in
सनसाइन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RS-CIT
डिजिटल राजस्थान,समृद्ध राजस्थान
CSC ACADEMY Computer Course
सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
RS-CIT लाखों लोगों का आजमाया हुआ एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498-13798, 79767-52935

भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की सुरक्षा का सवाल

हिमालयं समारभ्य यावत् इंदु सरोवरम्।
तं देवनिर्मितं देशं हिंदुस्थानं प्रचक्षते।।

भारतीय संस्कृति संपूर्ण विश्व की प्राचीनतम एवं अति संपन्न संस्कृति है। विश्व की कई संस्कृतियों का जन्म भारतीय संस्कृति से ही हुआ है। यह संस्कृति सदा ही संपूर्ण विश्व की प्रेरणादाई संस्कृति रही है। पूर्व से लेकर पश्चिम तक उत्तर से लेकर दक्षिण तक इसमें अनेकों प्रकार की विविधताएं हैं। भारत का प्रत्येक राज्य स्वयं में एक विशेष संस्कृति समेटे हुए हैं इसीलिए हमारी संस्कृति अनेकता में एकता का प्रतीक भी है। भारत की कई पुरानी सभ्यताओं जैसे सिंधु-घाटी सभ्यता , मोहनजोदड़ो एंव हड़प्पा आदि की जन्मभूमि है तथा कई धर्मों जैसे हिंदू , बौद्ध, जैन एवं सिक्ख धर्म की जन्मभूमि भी है।

यदि हम भारतीय संस्कृति की बात करते हैं, तो इसके अंतर्गत वह सभी क्षेत्र सम्मिलित हैं जिससे हर भारतीय का संबंध होता है। चाहे वह साहित्य का हो या भाषा का, खानपान का हो या वेशभूषा का, व्यवहार का हो या तौर तरीकों का, धर्म का हो या रीति रिवाजों का। भारतीय संस्कृति की बात करने के लिए हमें हजारों वर्ष पूर्व कालीन भारत का अवलोकन करना होगा। प्राचीन काल में हमारी मातृभाषा संस्कृत थी जो कि आधुनिक भारत में प्राय लुप्त सी हो गई है। संस्कृत भाषा भाषाओं की जन्मदात्री है। वैदिक काल में सर्वेसर्वा सनातन धर्म के भी अब कई विभिन्न रुप दिखाई देते हैं। वेद, पुराण, उपनिषद भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं। इन ग्रंथों में हमारे जीवन की विभिन्न अवस्थाओं के एक आदर्श रुप के मूल्यों का अंकन है। भारतीय वेदो का संपूर्ण विश्व में सम्मान किया जाता है तथा इनका सरल रुप में कई भाषाओं में अनुवाद भी किया जा चुका है।

कला के क्षेत्र में भी भारतीय संस्कृति काफी संपन्न रही है। प्राचीन गुफाओं में चित्रित कलाकृतियां इसका जीता जागता सबूत हैं। नृत्य कला में भी भारतीय पारंगत रहे हैं। यहां तक कि हमारे देवगण शिव ,गणेश एवं कृष्ण भी नृत्य कला से जुड़े हुए हैं। भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी, ओडिशी तथा कत्थक आदि नृत्य-कलाएं विश्व भर में अपना सम्मोहक रूप दिखाती हैं। भारतमुनि द्वारा रचित प्राचीन ग्रंथ नाट्यशास्त्र नृत्य कला को एक दिशा प्रदान करता है। प्राचीन काल में नृत्य कला द्वारा भारतीय महाकाव्यों रामायण, महाभारत आदि को प्रस्तुत करने की परंपरा प्रचलित थी जो कि आज भी देखी जा सकती है।

भारतीय खानपान की संस्कृति बेजोड़ है। आदि काल में जब कृषि का विकास नहीं हुआ था भारतीय निसंदेह मांस का सेवन किया करते परंतु जैसे-जैसे सभ्यता का विकास हुआ हमने शाकाहारी भोजन की ओर रुख कर लिया। खुशबूदार मसालों का उपयोग शायद भारतीयों से बेहतर कोई और नहीं कर सकता। भारतीय भोजन में व्यंजनों की विविधता के समकक्ष विश्व में कोई देश आज भी नहीं ठहरता है।

धार्मिक रीति-रिवाज ,आस्था एवं विश्वास भारतीय संस्कृति का अटूट हिस्सा हैं। हम भारतीय ईश्वर में विश्वास रखते हैं तथा जन्म-मरण के चक्र को भी मानते हैं। जन्म-संस्कार, विवाह-संस्कार तथा अंतिम-संस्कार भारतीयों की जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। नियमित पूजा-पाठ, धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन हमें बाल्यावस्था से ही सिखाया जाता है। भारतीय परिधानों की अपनी अलग ही गरिमा है पुरुषों की वेशभूषा में धोती-कुर्ता एवं पगड़ी का विशेष स्थान है तथा विशेष अवसर पर वह अभी भी इसी वेशभूषा में सुसज्जित होना पसंद करते हैं। स्त्रियों ने भले ही विभिन्न परिधानों को अपना लिया है, परंतु साड़ी का महत्व अभी भी कम नहीं हुआ है। भारतीय परिधान साड़ी नारी की गरिमा का प्रतीक है। मांगलिक कार्यक्रमों की बात हो या तीज- त्यौहारों की, महिलाएं साड़ी पहनना ही पसंद करती हैं। हमारे त्योहार हमारे जीवन में रंग भरते हैं। यह

जाति धर्म प्रदेश और मौसम से जुड़े हुए हैं। रक्षाबंधन जैसा विशेष त्योहार जो कि भाई बहन के प्यार का प्रतीक है, केवल भारतीय संस्कृति में ही दृष्टिगोचर होता है। अब यह प्रश्न उठता है कि यदि भारतीय संस्कृति इतनी संपन्न है, संपूर्ण है तो भी हम इसे छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति को क्यों अपना रहे हैं ?

यदि हम भारतीय इतिहास पर एक नजर डालें तो हमें यह पता चल जाएगा कि यह अनुभव हमारे लिए नया नहीं है। भारतीय संस्कृति पर अन्य कई संस्कृतियों का प्रभाव प्रत्यक्ष रुप से देखा जा सकता है। भारत सदियों तक गुलाम रहा है। कभी फ्रेंच तो कभी ब्रिटिश कंपनियो ने समय-समय पर हमारे देश में प्रवेश किया है। और यदि कोई व्यक्ति लंबे समय तक हमारे साथ रहता है तो यह स्वाभाविक है कि हम पर उनका प्रभाव दृष्टिगोचर हो। कभी चाहे, कभी अनचाहे ने हम पर उनका प्रभाव पड़ता ही रहा है।

मुगलों ने भी हम पर कई वर्षों तक शासन किया था। मुगलों ने भारत में कई इमारतों का निर्माण करवाया इसलिए हमारी वास्तु-कला तथा स्थापत्य -कला में मुगलों का प्रभाव प्रत्यक्ष देखा जा सकता है ।मुगल शासन ने कई सामाजिक कुप्रथाओं को भी जन्म दिया था। बहु-विवाह व पर्दा-प्रथा उसी का परिणाम है।

ब्रिटिश-शासकों ने भी हमारी संस्कृति पर गहरा असर छोड़ा है। संस्कृत भाषा का पतन एवं अंग्रेजी भाषा का उदय उसी काल में हुआ था। भारतीय पुरुषों ने धोती कुर्ता छोड़कर कोट-पतलून अपना लिए थे।

यदि गौर किया जाए तो ऐसा हर देश की संस्कृति के साथ ही होता आया है। यदि हमने पाश्चात्य -संस्कृति को अपनाया है तो पश्चिमी देशों को भी हमारी संस्कृति आकर्षित करती रही है। नमस्ते, पैर छूना, साड़ी पहनना और मंदिरों में पूजा -पाठ करना जैसी भारतीय संस्कृति को बहुत से विदेशी सहर्ष अपना रहे हैं। वे हमारे वेद और पुराणों का अध्ययन भी करते हैं। गीता उनका लोकप्रिय ग्रंथ है वह श्लोकों का उच्चारण भी हम से बेहतर कर सकते हैं। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र जी मोदी अपनी आयरलैंड यात्रा के दौरान वहां के बच्चों को सुंदर ढंग से मंत्रोच्चारण करते हुए देखकर भाव-विभोर हो गए थे।

अतः यह मानव स्वभाव है कि हम हर अच्छी और नवीन चीज की ओर आकर्षित होते हैं। हर संस्कृति की अपनी विशेषताएं होती हैं तथा अच्छाइयां और बुराइयां भी। यदि हम अपनी संस्कृति की बुराइयों को छोड़कर बदलाव करते हैं और किसी अन्य संस्कृति की उन परंपराओं को अपनाते हैं जो हमारे हित में है तो वह बदलाव जायज है। हमारी हमारी संस्कृति ने ऐसे बदलावों का सदा स्वागत किया है। सती-प्रथा उन्मूलन व विधवा-विवाह इसी प्रकार के बदलाव किए थे जो हमने सहर्ष अपनाएं थे।

इन दिनों हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भारतीय संस्कृति बचाओ अभियान बड़े जोर -शोर से छेड़ रखा है तथा अपने इस मिशन के लिए वे बड़ी-बड़ी बड़ी हस्तियों का सहयोग भी ले रहे हैं। भारत हमारी मातृभूमि है और भारत की पहचान भारतीय संस्कृति से ही है। हमें इसकी प्रतिष्ठा बढ़ाने हेतु यथासंभव प्रयत्न भी करने चाहिए। हमें चाहिए कि हम अपने बालकों को अपने धर्म ,रीति-रिवाजों और परंपराओं का सम्मान करना सिखाएं। युवा पीढ़ी को चाहिए कि वह अंधाधुंध पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण ना करें। यदि हम भारतीय संस्कृति को अपना कर अपने गंतव्य की प्राप्ति करते हैं इससे सुंदर बात और क्या हो सकती है? यह हम सभी जानते हैं कि हमारी प्राचीन सभ्यता व रीति-रिवाजों का धार्मिक आधार तो है ही अब वे वैज्ञानिक रुप से भी उचित प्रतीत होने लगी हैं । उदाहरणतयाः मस्तक पर तिलक लगाना, झुककर पैर छूना, अंगूठी व बिछुए पहनना, मांग में सिंदूर लगाना आदि कई परंपराएं ऐसी हैं जो हमारे चिकित्सा-विज्ञान से जुड़ी हुई हैं। भारतीय योग-प्रक्रिया को विश्व भर में मान्यता प्राप्त है।

सांस्कृतिक सुरक्षा एक मजबूरी के रूप में नहीं अपितु स्वेच्छा से की जानी चाहिए और यह तभी संभव होगा जब हम हमारी परंपराओं के महत्व को पहचानेंगे। आज की पीढ़ी हर बात क्या उचित आधार चाहती है। हमें उन को यह आधार समझाना होगा।

भूमंडलीकरण के इस दौर में जब मीडिया इतना प्रभावशाली हो गया है तो पश्चिमी सभ्यता की जानकारी एवं उसके प्रति आकर्षण को रोक पाना सहज कार्य नहीं। उनके आकर्षण व अपनी सुविधा के कारण हम उन संस्कृतियों को अपना रहे हैं परंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारतीय संस्कृति बेजोड़ है। हम भारतवासियों को इसे अपनाकर इसे सुदृढ़ करना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियां इसका लाभ उठा सकें। यदि हम इसी तरह पश्चिमी सभ्यता के पीछे दौड़ते रहे तो यह कहने में भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हमारी हालत है एक दिन उस धोबी के कुत्ते की तरह हो जाएगी जो ना घर का रहता है ना घाट का।

कुसुम अग्रवाल
हरि कृपा, 90- महावीर नगर,
100 फीट रोड, राजसंमद (राजस्थान)
पिन 313324, मो. 9461179465
kusumagarwal0702@gmail.com

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News
जयवर्द्धन NEWS

The True Patriot

Once in a small village, there lived a young man named Arjun. He was known for his strong opinions on the state of the country. Arjun often spoke out against corruption, inefficiency, and the many flaws he saw in the system. He believed that true independence meant freedom from these evils, and he dreamed of a revolution that would bring about instant change.

One day, an elderly wise man visited the village. Hearing Arjun's passionate speeches, the wise man approached him and asked, "Young man, what have you done for your country?"

Arjun, taken aback, replied, "I speak the truth! I point out what is wrong. I refuse to be a part of this corrupt system."

The wise man smiled and said, "Pointing out flaws is easy, but it is not enough. True patriotism lies in being the change you wish to see. To fix the system, you must work from within."

Confused, Arjun asked, "But how can I change something so broken?"

The wise man led Arjun to the village school, where the children sat on the floor with tattered books. "These children are the future of our nation," he said. "They need guidance, education, and values. By helping them, you can begin to change the system."

Inspired, Arjun decided to volunteer at the school. He taught the children about honesty, integrity, and the importance of serving the nation. Over time, the children grew into responsible citizens, and the village flourished.

Years later, when Arjun looked back, he realized that his true contribution to the nation wasn't his loud speeches but his quiet, persistent work within the system. He understood that real independence is not just freedom from oppression but the freedom to build a better, fairer society.

And so, Arjun became a well-known true patriot—one who served his country by being the change he wanted to see.

True patriotism goes beyond just celebrating our freedom; it involves understanding the needs of our nation and dedicating ourselves to fulfilling those needs with integrity. It is easy to criticize the system, but real change comes from within. Independence should inspire us to work within the system, to improve it, and to make it more just, efficient, and compassionate.

Our forefathers fought bravely to secure the freedom we enjoy today. Now, it is our turn to honor their legacy by committing ourselves to the betterment of our society. Whether we are educators, students, professionals, or leaders, we all have a role to play. Independence calls us to be vigilant, proactive, and accountable citizens.

Let us use our independence to uplift the downtrodden, to educate the ignorant, and to heal the wounded. Let us strive to eradicate poverty, injustice, and corruption, not by stepping out of the system, but by being a part of it and transforming it from within.

This Independence Day, let us pledge to serve our nation with dedication, honesty, and an unwavering commitment to its progress. Let us remember that true independence is not just about our own freedom, but about creating a nation where everyone can enjoy the fruits of freedom, justice, and equality.

Jai Hind!

Manisha Lashkari
Principal
Pragati Secondary School
Railmagra, Rajsamand
manishalashkari.blogspot.com

अणुव्रत से साक्षात्कार

लगभग 50 वर्ष पूर्व की बात है ईद का दिन था। मैं अपने परिवार सहित घर में ईद की खुशियां मना रहा था, तभी एक सलीकेदार आवाज आई अफजल भाई अरे घर में हो, तो में दौड़कर घर का दरवाजा खोल घर के बाहर आ गया। देखता हूं मेरे सामने हमारे ही अपने स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक स्व. देवेन्द्र कुमार जी कर्णावट मुझे हंसते हुए ईद की बधाई देते हुए बोल पडे क्या ईद की सेवईंया नहीं खिलाओगे। मैं सटपटा सा गया और अपने को संयमित कर बोला क्यों नहीं पधारिये पधारिये और मैं उन्हें अपने घर की बैठक में ले आया बिठाया पर मन में एक हलचल सी चल रही थी इससे पहले किसी भी विधर्मी ने मेरे घर पर घर की बनी सामग्री और जलपान नहीं लिया था पर फिर भी मैने आवाज लगाई भाई सेवईया उबालो और जल्दी से ले आओ काका साहब आये है। में फिर भी इस मुगालते में था कि काका साब मना कर देंगे और सिर्फ ईद की बधाई दे जाने को उठ खडे होंगे पर ये क्या..... ? वे बाते करने लगे मेरी कविता और मेरे बोलचाल की बातें बहुत ही आत्मीयता से तब तक करते रहे जब तक सेवईया बन कर हमारे सामने नहीं आ गई। उन्होंने सेवईयों की प्लेट से चम्मच उठाकर जों ही सेंवईंया अपने मुंह में रखी और में अचंभित सा देखता रह गया। वे बोले क्या देख रहे हो तुम भी तो खाओ मैं तुरन्त बोल पडा काका साहब मुझे आज एहसास हुआ आप सचमुच एक महान इन्सान है। सच्चे गांधीवादी और आदर्शवादी हैं काका साहब बोले अफजल इन्सान पहले इन्सान होता है बाद में हिन्दु या मुसलमान।

ये मेरे धर्मगुरू आचार्य श्री तुलसी का कथन है और फिर अणुव्रत प्रर्वतक तुलसी ने कहा है अणुव्रती व्यक्ति किसी की हत्या नहीं करता, अणुव्रती व्यक्ति किसी पर आक्रमण नहीं करता, फिर अणुव्रती व्यक्ति हिंसात्मक उपद्रव और तोडफोड नहीं करता, अणुव्रती व्यक्ति मानवीय एकता में विश्वास रखता है। फिर अणुव्रती व्यक्ति धार्मिक सहिष्णुता रखता है, साम्प्रदायिकता उत्तेजना नहीं फैलाता, अणुव्रती व्यक्ति चुनाव में अनैतिक आचरण नहीं करता अणुव्रती व्यक्ति पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहता है उनकी कहीं इन बातों का मेरे मन पर मेरे पर बहुत बडा प्रभाव पडा और मैने जिज्ञासावश मेंने बोला ऐसे सन्त महापुरूष आचार्य श्री तुलसी से में मिलना चाहता हूं वे हंसते हुए बोले कौनसी बड़ी बात है मैं तुम्हे जरूर उनसे मिलवाऊंगा। और वे मुझे ढेरों ईद की बधाईयां देते हुए उठ खडे हुए और बाकी घर के लोगों से मिलकर घर से निकल पडे।

कुछ ही समय बिता होगा कि एक दिन काका साहब का बुलावा आया बोले अफजल कल आचार्य श्री तुलसी साधना शिखर पर पधारेंगे तुम निश्चित समय पर आजाना में तुम्हारी मुलाकात आचार्य श्री से करवाऊंगा। और वो दिन मेरे जीवन का एक अहम दिन था जब में आचार्य श्री से मिला और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

फिर उसके बाद दुसरा अणुव्रत से साक्षात्कार हुआ मोहन भाई के द्वारा । मोहन भाई जब पहाडों की चोटी पर बडी बडी चट्टानों के बीच फिता

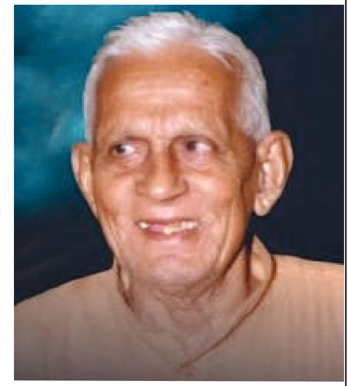

और आत्मीयता के साथ उन्होंने मुझे अपने सपने अणुव्रत विश्व भारती की रूपरेखा बताई और में उनके इस दृढ संकल्प से इतना प्रभावित हुआ कि रोज-रोज उनसे मिलने उनके पास पहुंचने लगा और हमारे संबंध मजबूत होते रहे।

एक दिन सुबह 5 बजे दरवाजे पर खट-खट की आवाज सुनाई दी तो मैने दरवाजा खोला तो सामने मोहन भाई और उनके साथ जोधा बा जो अपने कंधे पर झाडुओं का गट्ठा लिए खडे थे। मोहन भाई बोले अफजल भाई नगरपालिका को बहुत बार लिख चुका हूं राजनगर रोड से अणुव्रत विश्व भारती तक की रोड पर गंदगी पसरी पडी है अतः कचरा पड़ा हुआ है पर कोई सुनवाई नहीं.. सोचा क्यों ना हम ही सफाई कर दें... क्या तुम मेरा साथ दोगे और मैं बिना एक क्षण गवाएं उनके साथ हो गया और हम तीनों सफाई में जुट गये। हमें सफाई करते देख 5-6 व्यक्ति और मोहल्ले वाले सफाई अभियान में लग गये 2 3 घण्टे की मेहनत से सफाई कर डाली इस घटना का मेरे जीवन पर बहुत बडा असर पडा और मेरी आस्था अणुव्रत पर और दृढ हो गयी। फिर कुछ ही दिनों बाद राजनगर में साम्प्रदायिक उनवाद फैला। तो मोहन भाई फिर बोले अफजल कल हमें कलेक्ट्रेट के बाहर मौन धरना देना है साम्प्रदायिकता के खिलाफ और मैं फिर उनके साथ धरने पर बैठा ये अणुव्रत की ही जोश भरी लगन थी तब से आज तक मेरा पूरा विश्वास अणुव्रत पर है कि मेरे देश भारत को सचमुच अणुव्रत के सिद्धान्त की जरूरत है अणुव्रत के सिद्धान्त से ही अनेकानेक धर्मावलम्बियों, अनेकानेक जातियों, और थाथियों वाले देश भारत में शान्ति और सद्भावना अणुव्रत निति से ही संभव है किसी बंटवारे वाली निति से नहीं।

अफजल खां अफजल
वरिष्ठ साहित्यकार
सलूस रोड, राजसमंद

स्व. डॉ. शम्भूलाल ने दी इंसानियत धर्म की सीख

"मैं भारत बन रहा हूं, अच्छा और मजबूत, जो विश्व पर अमृत की वर्षा करेगा" ऐसे स्लोगन लगभग 40-50 वर्ष पूर्व प्रत्येक विद्यालय में चाहे वह गांव का हो या कस्बे का या शहरों का। हर विद्यालय में एक आदर्शवाद के रूप में लिखा होता था। और लिखा होता भी क्यों नहीं? उस समय के डिप्टी डायरेक्टर स्व. शंभूलाल जी शर्मा पूरे राजस्थान में शिक्षा के क्षेत्र में अपना एक अलग स्थान बनाए हुए थे। हर विद्यालय में जाना और बालकों से रूबरू हो खेल-खेल में ही एक अच्छे भारतीय होने का पाठ वे बालकों को पढ़ाया करते थे। इतने बड़े पद पर होते हुए भी उन्होंने अपने शिक्षकपन को अंतिम समय तक बनाए रखा। सेवानिवृति के बाद भी वे विद्यालयों में जाकर बालकों के साथ गुलमिल जाया करते थे और अच्छे नागरिक होने का ज्ञान दिया करते थे। वे कहते थे "मेरे भगवान बालकों में हैं"।

आपका जन्म कांकरोली में रेती मोहल्ला स्थित हाथी गली में श्री लीलाधर जी सनाढ्य के घर में हुआ था। इस मध्यमवर्गीय परिवार में 5 जनवरी 1909 को आपका जन्म हुआ। बाल्यकाल से ही आप विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। एमए हिन्दी में करने के बाद आपने बीटी पीएचडी की और अपना जीवन शिक्षा के लिए समर्पित कर दिया। जब एफ.एल.ब्रेन गुड़गांव में ग्राम विकास का कार्य कर रहे थे तब डॉ. शंभूदादा वही ग्राम विकास का कार्य मेवाड़ के मादड़ी, एकलिंगपुरा गांव में कर रहे थे। उनके प्रेरणा के स्त्रोत डॉ. मोहनसिंह मेहता थे। उन्हें ही आदर्श मान और उनसे प्रेरणा ले आपमे समाज सेवा की लगन लगी। मेवाड़ हरिजन सेवा संघ के मंत्री बने और अदम्य उत्साह से समाजसेवा में जुट गये। समाज शिक्षा हेतु ज्ञानदीप मित्ति-पत्र निकाला और समाज सेवा में अनेक आयामों का प्रयोग किया। स्काउट गाइड में भी आपकी गहरी रूची थी। स्काउट गाइड मुवमेन्ट से आप सन् 1923 में जुड़े और 1938 से 1944 तक मेवाड राज्य स्काउट एसोसिएशन के संयुक्त मंत्री पद पर रहे। अपने इस कार्यकाल में आपने स्काउट मुवमेन्ट को अनेकानेक ऊँचाईयों पर पहुंचाया।

डॉ. शंभु दादा के राजनेताओं से भी बड़े आत्मीय और मधुर सम्बन्ध थे। जब श्री मोहनलालजी सुखाड़िया ने इन्दुबाला से शादी की तो आप इन्दुबाला के पिता बने और आपने इन्दुबाला का पिता बनकर कन्यादान भी किया। भुतपूर्व मुख्यमंत्री श्री हीरालालजी देवपुरा आपको अपना गुरू मानते थे और जब भी कांकरोली आते आपके घर जरूर उनसे मिलने जाते थे।

राजस्थान शिक्षा विभाग में शारीरिक शिक्षक के रूप में प्रारम्भ कर विभाग के कई सर्वोच्च पदों पर उत्तरदायित्व के आदर्श कायम किए। कवि लेखक और एक अच्छे वक्ता के अरीष्टि रूप में भी आप प्रख्यात हुए। उनका जीवन एक आदर्श पुरूष का था। उनके विचार उनके द्वारा लिखे इस दोहे से प्रकट होता है-

देना है तो दे मुझे, मेरे दीनदयाल
भीखमंगों की फौज में, खड़े न हो शंभूलाल।

डॉ. शम्भूलाल शर्मा सादगी और इंसानियत की जिन्दा मिसाल थे। वे मानवतावादी थे और जाति धर्म और कर्म के आधार पर कभी उन्होंने एक इंसान से दूसरे इंसान में फर्क नहीं समझा। वे सभी भारतवासियों को समान और एक होने की बातें सदैव किया करते थे।

मैंने बाल्यकाल से ही स्कूलों में उनके उद्बोधनों को सुना और उनके विचारों को आदर्श माना। सन् 1958 को अजमेर में राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिता में एकाभिनय में राजस्थान की ओर से मेरा चयन हुआ और मैं जब इस प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम आया तो उस समय डॉ. शम्भूलाल शर्मा डिप्टी डायरेक्टर शिक्षा राजस्थान थे।

वे उस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पद पर आसीन थे। जब उद्घोषक ने एकाभिनय में अफजल खां राजकीय माध्यमिक विद्यालय कांकरोली प्रथम की घोषणा की, तो डॉ. शम्भूलाल शर्मा अपने आसन से खड़े हो सीधे स्टेज पर आ गए और इधर-उधर देखते हुए कहने लगे मेरे कांकरोली का जो बालक प्रथम आया है, वो कहां है, मुझे सामने पा उन्होंने बड़े ही जोश के साथ मुझे सीने से लगा उठा लिया और कहने लगे ये मेरे गांव कांकरोली का बालक है, जिसने आज मुझे गौरवान्वित किया है। फिर तो बात बनती ही चली गई, वे जब भी कांकरोली आते स्कूल में आते, मुझसे मिलते और आशिर्वाद देते, जब मैं अध्यापक बन गया, तो मेरा और उनका रिश्ता और भी प्रगाढ़ हो गया। मेरा उनके घर पर आना-जाना उनसे बातें करना, नेक सलाह लेना मेरे जीवन का अंग बन गया।

जब वे सेवानिवृत हो कांकरोली आ गए, तब तो रोज-रोज उनके साथ उनके घर पर बैठके होने लगी। अचानक एक दिन वे बोले अफजल अभी जन गणना चल रही है, क्या तुम्हारे घर जनगणना करने वाले अधिकारी आ गए। मैंने कहा अब तक तो नहीं आए साहब। वे बोले तो फिर ठीक है, अबकी बार जनगणना करने आए, तो मैं भी अपना धर्म इंसानियत लिखाऊंगा और तुम भी अपना धर्म इंसानियत लिखवाना और वो दिन भी आया, जब जनगणना करने वाले अधिकारी ने मेरा नाम पिता का नाम, घर के सदस्यों की संख्या व नाम आदि-आदि सभी सवालों के जवाबों को अपनी नोटबुक में अंकित कर लिए और धर्म की जगह जब वे मुस्लिम लिखने लगे, तो मैंने रोका और कहा मेरा धर्म इंसानियत लिखो। अधिकारी जी अचंभित हो मेरी ओर देखने लगे और हंस कर बोले आपका नाम अफजल है, तो धर्म तो मुस्लिम ही होगा ना। मैंने कहा नाम से कोई मतलब नहीं है, आप तो मेरा धर्म इंसानियत ही लिखो। अधिकारी जी ने अपने ठेले से जनगणना निर्देशन की एक पुस्तक निकाली और जोर-जोर से पढ़ने लगे, हिन्दू धर्म है, मुस्लिम धर्म है, सिक्ख धर्म है, ईसाई धर्म है, यहुदी धर्म है, बौद्ध धर्म है, जैन धर्म है, फारसी धर्म है और भी कई अनेकानेक धर्म है। पर इंसानियत धर्म तो इस पुस्तक में नहीं है। मैं तो इसमें जो धर्म लिखा है, उसमें से ही लिख सकता हूं। मैंने कहा तो फिर स्थान खाली छोड़ दीजिए।

मैं आपसे कल बात करूंगा। मैंने जब शम्भू दादा के घर जाकर ये सारी बातें उन्हें बताई, तो वे मुस्कुराते हुए बोले बस अफजल मैं तुम्हे यही समझाना चाहता था कि अपने देश में न जाने कितने धर्म हैं, पर इंसानियत धर्म नहीं है। हमें इंसानियत धर्म को लाना है। उनकी इस सोच का में कायल हो गया। देश की एकता, अखण्डता और भाईचारे की भावना वाली सोच को सदा-सदा के लिए मन में बसा लेने का मैंने संकल्प लिया और आज भी इसी सोच के साथ जिन्दा हूं।

आपके एकमात्र पुत्र व दो पुत्रियां थी, पुत्र का नाम स्व. श्री हरिकान्त शर्मा वे भी अध्यापक ही रहे और इस दुनिया को अलविदा कह गए। दोनों पुत्रियां भी ईश्वर को प्यारी हो गई।

आपका स्वर्गवास दिनांक 09.10.1987 को हुआ, किन्तु शम्भू दादा अपने कृतित्व से सदा लोगों के मन में अमर रहेंगे। ऐसे विलक्षण प्रतिभा के धनी को शत- शत् नमन और भावभीनी श्रद्धांजलि।

अफजल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली
मो. 98284-75288

कमर मेवाड़ी की कविताएं : समकालीन प्रकाशित कविताओं का सुन्दर और संग्रहनीय संकलन

हिन्दी साहित्य क्षेत्र में अपनी सृजनात्मक क्षमताओं और गति के बल पर क़मर मेवाड़ी को सम्माननीय स्थान प्राप्त है। इस सम्मानजनक स्थान को प्राप्त करने में क़मर मेवाड़ी की सुदीर्घ साहित्य साधना व जीवन मूल्यों के प्रति समर्पित जीवन स्वीकृति को अनुभव करता हूँ। निरंतर लेखन के प्रति समर्पित रहना यही तय करता है किए विगत छह दशकों से क़मर मेवाड़ी की साहित्य.साधना अनवरत और अबाध गति से अग्रसर है।

"कमर मेवाड़ी की कविताएँ" काव्य संकलन में क़मर मेवाड़ी की प्रतिष्ठित विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित कविताओं को देखकर बहुत अच्छा अनुभव हुआ। इस संकलन से स्पष्ट होता है कि क़मर मेवाड़ी आम जन की बात करते हुए जनवादी होने के साथ साथ जागरूक और समकालीन बने रहे। यही समकालीनता क़मर मेवाड़ी की काव्य में विविधता को लेकर आई है। क़मर मेवाड़ी के लिए डॉ. मनोहर प्रभाकर ने उचित ही कहा है- **"वह मानवीय संवेदनाओं का ऐसा साहित्यकार है, जो अपने सामाजिक परिवेश और हलचलों के प्रति पूर्ण जागरूक है।"**

क़मर मेवाड़ी सम्पूर्ण जन जीवन को स्वीकार करते हुए जन के लिए जागरूक के साथ पक्षधर देखे जा सकते हैं। वे जन की पीड़ाओं और शोषण को अनुभव कर क्षुब्ध होते हैं। समाज में शोषित जन की ओर से अपना स्वर मुखर करते हैं। आपकी कविताओं का प्रकाशन सत्तर के दशक के प्रारम्भ के साथ साथ होने लग गया था। इस समय में प्रकाशित कविता "नए भोर की प्रतीक्षा" इस हेतु उल्लेखनीय है। इस कविता में पूँजीपति व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह का स्वर है। कवि अपने विद्रोह के स्वर से परिचित ही नहीं कराते हैं अपितु वे आम जन को इस व्यवस्था को बदलने के लिए भी तैयार करते हैं। क़मर चाहते हैं कि व्यक्ति रूमानियत से अलग होकर यथार्थ पर आकर दृष्टि प्राप्त करें। इस यथार्थ दृष्टि सम्पन्नता से ही पूँजीपति व्यवस्था समाप्त होगी। "नए भोर की प्रतीक्षा" कविता का प्रारम्भ कुछ इस प्रकार है-

"मैं एक ऐसे स्थान पर खड़ा हूं
जहां आकाश और धरती को बातें करता देखता हूं"

कविता का प्रारम्भिक अंश हमें चिंतन के लिए तैयार करता है। स्थान एक ही है परंतु सामाजिक संरचना दो प्रकार की है। दोनों वर्गों के स्वरूप और संगठन में पर्याप्त भिन्नता है। ऐसी स्थिति में दो विरुद्ध वर्गों का बात करना पाठक को आगे के लिए तैयार करता है-

"और देखता हूँ लोगों के उमड़ आए सैलाब को
जो इतना अधिक उत्तेजित है कि

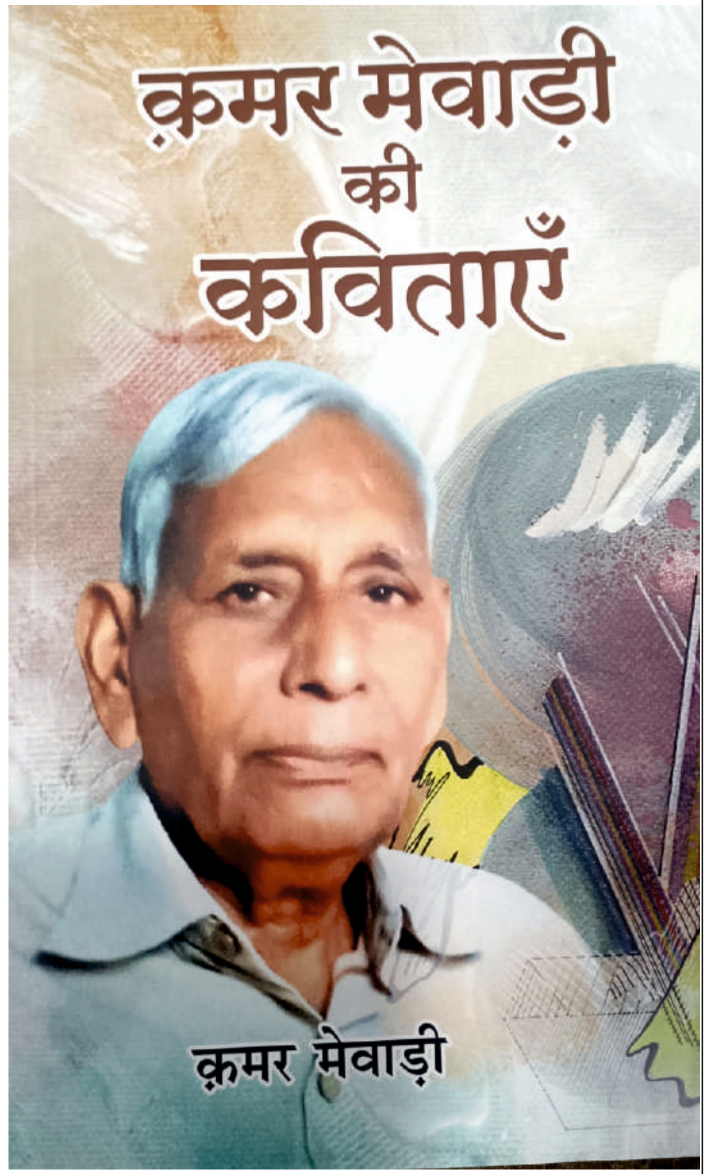

कारखाने, फैक्ट्रियों को जला दे, छते तोड़ दें
और हरे भरे बगीचों और फार्मों को कुचल डाले
जिन पर चंद असरदार लोग
साँप की तरह कुंडली मारे बैठे"

उक्त अंश में कवि कारखाने, फैक्ट्रियों, बगीचों और फार्मों को जीवन के लिए अनुपयोगी नहीं मानता। वह इसलिए नष्ट कर देने का हिमायती है कि शोषक इनके बलबूते ही सर्वहारा वर्ग का शोषण करता है। क्योंकि सर्वहारा वर्ग को उसका अधिकार नहीं मिल रहा है, जिससे जीवन विषम से विषम होता चला जा रहा है। "नए भोर की प्रतीक्षा" कविता इतने भर में पूरी नहीं हो जाती कविता का चरम है।

"लोगों की उत्तेजित आँखों में इतनी आग है कि
यदि वे चाहें तो उपस्थित कर दे महाप्रलय का दृश्य पर
वे उस दिन की प्रतीक्षा में है, जब आकाश का आदमी
पराजय का कवच पहन धरती पर उतर आएगा।"

क़मर मेवाड़ी अपनी कविता में प्रगतिशील चेतना के बल पर इसी तरह आम जन को अपनी स्थितियों और हालातों को बदलने के लिए ही तैयार ही नहीं करते हैं अपितु, सम्पूर्ण जीवन के परिदृश्य को प्रस्तुत कर जन के जीवन को सुखद स्वरूप में बदलना चाहते हैं। यही क़मर मेवाड़ी का जनवाद है। "नए भोर की प्रतीक्षा" क़मर मेवाड़ी की वह प्रारम्भिक कविता है, जिसमें निहित प्रगतिशील जनवादी विचारधार बहुत दूर तक बही है। आगे चलकर "हर साल बाढ़ें नहीं आती हैं, बड़े भोले हैं लोग, अब हमें तोड़ने ही होंगे तिलिस्म, जंगल फिर सुलगेगा, सुनो लोगों, आग उगलते सूर्य की प्रतीक्षा, वे लोग, कहिए जनाब, वह, सुनो मेरे वक्त के बादशाह, अगर तुम न होते, मैं सलाम भेजता रहूँगा, शहादत, वे कौन लोग हैं, और मजदूर आदि कविताएं उल्लेखनीय हैं।

क़मर मेवाड़ी की सत्तर के दशक में ही प्रकाशित "हुकम बादशाह का" अपने आप में विशिष्ट कविता है। इस कविता का मूल स्वर जनवादी स्वर ही है। यह कविता मूल रूप से सामंतवादी व्यवस्था के खिलाफ प्रतिक्रिया में लिखी गई कविता है। मजदूरों, किसानों, बच्चों, शिशुओं और वृद्धों के प्रति चिंता का स्वर है। कविता का प्रारम्भ ही पाठकों को सामंतवादी व्यवस्था और अमानवीय सोच के विरुद्ध तैयार करता है-

"क्योंकि बादशाह का यही हुकम था
इसलिए तहस नहस कर दी गई फसलें
और उजाले के सीने में घोंप दिया गया खंजर"

कवि के आक्रोश का कारण मात्र सामंतशाही व्यवस्था और संवेदनहीनता ही नहीं अपितु, समकालीन उन सृजनधर्मी मित्रों के प्रति भी है जो सत्तासीन लोगों के संकेतों पर चुप हैं। कविता में आक्रोश की अत्यधिकता के कारण को साफ साफ लिखते हैं-

"पर किसी ने भी इन काली करतूतों को
उजागर नहीं किया क्योंकि बादशाह का यही हुकम था"

कविता में संवेदना को जन्म देने वाला कारण अभावग्रस्त लोगों का ज़िंदा रहने के लिए किया जाने वाला संघर्ष है-

"वे लोग अभावों में जूझते
जिंदा रहने के लिए संघर्ष कर रहे थे
सिर्फ इसी बात को लेकर
वहाँ आँसू गैस के गोले छेड़े गए
और गोलियाँ चली क्योंकि बादशाह का यही हुकम था"

यह कविता बादशाह की कलाई खोले बिना नहीं रहती। कवि की दृष्टी में लोकतन्त्र में अपनी आवश्यकताओं की सम्पूर्ति में उठाई जाने वाली आवाज को कुचलने की यह प्रवृत्ति मूल्य हंता और अमानवीय है-

"पर मेरी समझ में नहीं आया
आखिर क्यों छिन लिए गए धरती से उसके लाल
किसानों के हाथ से हल, मजदूर के हाथ से रोटी
स्कूल जाते बच्चों के हाथ से बस्ता,
दुधमुँहों से उनका दूध, बुढ़ापे के हाथ से लाठी
आखिर क्यों क्या यह भी बादशाह का हुकम था"

"हुकम बादशाह का" कविता की तरह ही सत्ताशाही राजनैतिक लिप्साओं से प्रेरित हिंसा, अव्यवस्थाओं, सांप्रदायिकता और जीवन के अवमूल्यन पर रोष प्रकट करने वाली तीखी अभिव्यक्ति से सम्पन्न कविताओं में "सुबह की प्रतीक्षा में, राजा की सवारी, आबनूसी चेहरों के नाम, सुनो मेरे वक्त के बादशाह, मौत की आँधी, हम देख रहे हैं, संक्रमण का समय, भूख, हाँ यही होना था, वे वक्त के बादशाह हैं, वे लोग, कब तक, एक प्रश्न, वह योद्धा है, पिता" आदि के साथ कुछ और भी शेष कविताओं के नाम उद्धृत किए जा सकते हैं।

क़मर मेवाड़ी तत्कालीन मूल्य क्षरण पर खुलकर लिखते हैं। इस दृष्टि से संकलित कविताओं में प्रतिनिधि कविता "सुना तुमने" आस्वादनीय है। इस कविता में कवि को उन सहयात्री मित्रों से शिकायत है कि वे संघर्ष के स्थान पर भौतिकवादी के साथ साथ सुविधा भोगी और रोमांटिक हो गए हैं। कविता बिंबों और रूपक बनाते हुए संकेतों में प्रभावी तरीके से बात प्रारम्भ करती है। वह कुछ इस प्रकार है-

"सुना तुमने ! वे लोग जो यात्रा में साथ थे
उन सबके चेहरे स्याह हो गए हैं
और उनकी आँखों में उग आया है
गुलाबी गालों का खूबसूरत जंगल।"

कवि को गंभीर चिंता है कि सहयात्री मित्रों को रोटी की चिंता नहीं है। रोटी कैसे मिलती है और रोटी के साथ कौन कौनसी आवश्यक आवश्यकताएं हैं ? साथ ही उस सबके लिए क्या क्या करना होता है ? इस प्रकार के स्वतः प्रादुर्भूत प्रश्नों से पाठकों में विचार उत्पन्न होता है। कोटी की चिंता के स्थान पर सहयात्री मित्रों की "आसमानी किताबों" के प्रति आसक्ति और "चमत्कारों" के फैलाने की प्रवृत्ति कवि को उचित नहीं लगती। कवि को उनसे नफरत है। कवि को संघर्ष करते लोग ही प्यारे लगते हैं-

"और अब प्यारा लगने लगा है
कड़ाके की ठंड में खेत की सिंचाई करता तुलछा भील
लंगोटी बाँधे चाक पर बर्तन बनाता पेमा कुम्हार
अपनी माँ के इलाज के लिए कौड़ी कौड़ी जोड़ता नूरा हम्माल
उदयपुर की सड़कों पर सरपट भागता श्रीमाली हॉकर
और ऐसे असंख्य लोग जो पानी से नहीं
पसीने से फसल तैयार करते हैं, मुझे प्यारे लगते हैं।"

"सुना तुमने" कविता सत्तर के दशक में प्रकाशित हुई है। इस तरह से लिखी गई समस्त कविताएं सूक्ष्म शिल्प के साथ समर्थ बिम्ब योजना से युक्त हैं। ऐसी रचनाओं में "बाढ़, क्यों चिपकी रहती है चेहरे पर उदासी, देखते- देखते, यातनाओं का दौर, एक दोस्त के लिए, तुम्हारा खत, भेड़ चराती लड़की, हर साल बाढ़ें नहीं आती, अभी बेमतलब नहीं

हुई कविताए शब्दों को सान पर चढ़ा रहा हूं। तिलिस्म, यह सच है, एकलव्य, बूढ़ी माँ, बड़ा आदमी, मेरे शहर में, जंगल, फैसला होने तक, वह उसका बाप है, मैं सलाम भेजता रहूँगा, कब तक आदि कविताओं के नाम लिए जा सकते हैं। इसके साथ "नया सूरज, जंगखोरों के नाम, हम जानते हैं, उत्सव दिवस" आदि कविताओं में तानाशाही और युद्धोन्माद पर चोट की है। ये सब कविताएं अपने समय के दस्तावेज़ की तरह हैं।

कमर मेवाड़ी ने समय- समय पर अपने आस- पास के उन मित्रों पर लिखा है जो कि उनके सोच के अनुसार साफ और ईमानदार नहीं हैं। उस तरह के तमाम लोगों को अपनी कविता की सीमा में ले आते हैं। इस तरह की कविताओं में आठवें दशक में प्रकाशित "डींग हाँकते दोस्त" कविता उल्लेखनीय अनुभव करता हूँ। "डींग हाँकते दोस्त" कविता में डींग हाँकने वाले दोस्त को कवि दगाबाज मानते हैं। वे मित्रता की कसौटी पर खरा नहीं उतरते। क्योंकि वे कवि की दृष्टि में विश्वसनीय नहीं हैं-

"डींग हाँकने वाले दोस्त अक्सर दगाबाज निकलते हैं
जो दोस्त को कमजोर और दुश्मन को ताकतवर बना देते हैं"

"डींग हाँकते दोस्त" गंदी राजनीति में चाटुकार होते हैं। इस कुवृत्ति के चाटुकार दोस्त घातक और असामाजिक तत्व बन जाते हैं-

"ऐसे दोस्त, दुश्मन के सामने कोसते हैं दोस्त को
और दोस्त के आगे तारीफ़ों के पुल बना देते हैं,
देश की गंदी राजनीति ने चाटुकार बना दिया है दोस्तों को
वे दोस्त के सीने में छुरा घोंप निकाल देते हैं उसकी अंतड़ियाँ
और दुश्मन के खेमे में प्रवेश कर उड़ाते हैं गुलछर्रे
फिर दुश्मन और तेजी से बजाता है अन्याय का बिगुल"

क़मर मेवाड़ी को दुहरे चरित्र को ढोते हुए लोग खलते हैं। साफ साफ कहूं, तो वे उनको पसंद ही नहीं करते। इस तरह की कविताओं में "दोस्त, तीन कविताएँ, बड़ा आदमी, मैं याद आऊँगा, अंधेरा घना है, शुभ चिंतक, एक बेशर्म नदी, सुना तुमने, आप उसे जानते हैं, नालायक लोग" आदि कविताओं को लिया जा सकता है। ये कविताएं समकालीन है और इन सबमें आमजन का हित संधान ही निहित है।

क़मर मेवाड़ी के विपुल साहित्य राशि में मानवीयता के संपोषण का स्वर चरण चरण पर मिलता है। उसके पीछे उनकी सूक्ष्म प्रेमानुभूतियाँ हैं। उनको अनदेखा करना मैं उचित नहीं मानता। "देहलाज" सत्तर के दशक में प्रकाशित वह कविता है जिसमें सर्व प्रथम प्रेम को कविता के रूप में अभिव्यक्ति मिलती है। कुछ आगे चलकर क़मर जी की प्रेम आधारित कुछ कविताएं प्रकाशित हुई। उनमें "मुझे कुछ नहीं कहना है, एक अदद चुंबन, क़मर मेवाड़ी की चार कविताएं, जब कभी, पहचान, अकेलेपन का दर्द और विदागीत" शीर्षकों से कविताएं प्राप्त होती हैं। "शिवदागीत" कवि की वह मार्मिक कविता है, जिसमें प्रेम की अति सूक्ष्म गंध आंखों को नम करने की क्षमता रखती है-

"किसी उजाड़ बियाबान की तरह हो गए हैं, दिन और रातें
किसी विधवा की सूनी मांग जैसी
मौसम के पास बतियाने जैसा कोई संदर्भ नहीं रहा"

प्रिय साथी के अभाव में सब संदर्भहीन हो जाता है। कवि अपने साथी की खोज में व्याकुल है-

"अब कहां मिलेगा हँसकर बगलगीर होने वाला वह दोस्त"

यह होने पर भी कवि निराश नहीं है। उसका प्रेम उदधि बना हृदय यह स्वीकार नहीं करता कि उसके सुख दुख का साथी पास नहीं है। उसे आशा है समय बदलेगा। उसके हृदय के अनुकूल सब कुछ होगा-

"फिर भी मैं खुद को तैयार कर रहा हूँ
आने वाले बसंत के स्वागत में शायद फिर मौसम बदले
शायद फिर बरसात की बूंदों से
गमक जाए यह धरती और विपरीत दिशा में चलने वाली हवा
फिर सही दिशा में बहने लगे तेज तेज
और हम अपनी उमंगों के साथ समुद्र के सीने में समा जाएं"

कविता का समापन हृदयद्रावक है। कवि को लगता है कि अब भी उनकी प्रेयसी जो उनकी कांता है, अब इस लोक में है ही नहीं, वह अब "निर्वासित राजकुमारी" हो गई है।

"यह कविता पढ़ने के बाद शायद चौंक उठे निर्वासित राजकुमारी, पर मैं विदागीत गाने के अलावा अब कुछ कर नहीं सकता"

निर्वासित राजकुमारी यह कविता पढ़ेगी और चौंक उठेगी। यह प्रेम की पराकाष्ठा है। कवि ने शुद्ध रूप से अपने लिए संभावना खोज ली। मैं सोचता हूं इससे सुंदर, शिष्ट व सूक्ष्म प्रेमाभिव्यक्ति क्या हो सकती है ?

अस्तु, कमर मेवाड़ी की पत्र पत्रिकाओं मे प्रकाशित कविता का यह संकलन हमारी दृष्टि को साफ करता है और यह बताता है कि क़मर मेवाड़ी विगत छह दशकों से निरंतर लिखते पढ़ते आ रहे हैं। उनकी कविताओं में साठोत्तरी कविता के बाद की प्रगतिशील चेतना से प्रेरित जनवाद को स्थान मिला है। जनवाद के साथ साथ समकालीन जीवन का विराट दृश्य भी इन कविताओं में निरंतर दिखाई देता है। अतः कमर मेवाड़ी का काव्य जनवाद से लेकर समकालीन जीवन की अभिव्यक्ति का स्वर है। कविताओं की सादगी ही कविताओं का कलात्मक सौंदर्य है। समकालीन विसंगतियों से उत्पन्न आम जन के कष्ट की अनुभूतियों पर मानवीय दृष्टि से चोट कर निरापद सुखद समाज की स्थापना कराने की कामना ही भाव सौंदर्य है।

अंत में कमर मेवाड़ी जी के लिए अनेक शुभकामनाएं। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप अपने परिवार और मित्रों के साथ स्वस्थ और सानंद रहते हुए "जीवेत् शरदः शतम्श्" को सार्थक करें। साथ ही, कमर मेवाड़ी जैसे विराट व्यक्तित्त्व वाले साहित्यकार पर लिखना अपना सौभाग्य समझता हूं।

शुभकामनाओं के साथ।

त्रिलोकी मोहन पुरोहित
शिक्षाविद् व साहित्यकार
शांति कॉलोनी, कांकरोली
राजसमंद (राजस्थान)
मो. 9414174179, 8094531111
tmpshreeram@gmail.com

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

जिलेवासियों को आजादी की 77 वीं वर्षगांठ पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

सत्यप्रकाश काबरा — अध्यक्ष
संजय सामसुखा — महासचिव
निर्मल बड़ाला — कोषाध्यक्ष

हर्षलाल नवलखा : उपाध्यक्ष पसून्द रोड
नरेन्द्र खटोड़ : उपाध्यक्ष नाथद्वारा रोड
निलेश सूर्या : उपाध्यक्ष आमेट रोड

एवं समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण

मार्बल गैंगसा एसोसिएशन, राजसमन्द

स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

वार्ड पंच- सविता कुंवर राजपूत, झमकू कुंवर राजपूत,
सुरेशचंद्र बलाई, भीमसिंह राजपूत, रतन कुंवर राजपूत,
सोहनीबाई जोशी, सुरेशचंद्र जोशी,
कैलाश भील, लहरसिंह राजपूत, मीरा चदाणा

ग्राम विकास अधिकारी

भगवान सिंह राजपूत
सरपंच

डेंगू से बचाव के लिए रखने वाली सावधानियां

मच्छर के काटने से बचें
पूरे बाजू के कपड़े पहनें।

घर के आसपास पानी इकट्ठा न होनें दें
रूके हुए पानी में पेट्रोल डालें।

पक्षियों के पीने के पानी को
नियमित रूप से बदलें।

: ग्रामवासियों से अपील :

- बरसाती पानी को व्यर्थ न बहने दे।
- पानी की बूंद-बूंद को बचाएं।
- अधिकाधिक पौधारोपण कर उनके रख-रखाव व सुरक्षा करें।
- जन्म-मृत्यु का पंजीयन अवश्य करावें।
- बाल विवाह सामाजिक अपराध है, इसे रोके।
- परिवार नियोजन अपनाएं।
- जन आधार कार्ड बनवाएं।
- अधिक से अधिक पेड़ लगावें।
- खुले में शौच नहीं करें।

ग्राम पंचायत शिशोदा, पंचायत समिति खमनोर

बोलो मोटा कार किंग : कठै थाणी पारकिंग

मनख मोटी-मोटी कारां लावे तो परी। लायां पाछे दनिया ने वतावे के मूं कतरो लखपति-करोड़पति हूं न कतरो रूतबा वाळो हूँ। सोरूम में कार रे हामे मोटी कूंची लारे फोटू खेंचावे। बारणे लाईन कार ने हूदी मन्दर में लेई जावे न मूंगा भाव रा पूजा-पाठ करावे। नारेळ वदारे, परसाद वांटे, कार रे तलक काडे न फूल माळा ऊं लादी देवे। नवी वीन्दणी जसी कार बी हरख- हरख करवा लागे। पूजा पाठ करावा वाळा माराज ने बी भारी दक्षिणा मले। पछे आखा सैर में भमी-भमी'न वनोळी काडी' न सबां ने वतावे के सैर में अस्या लेटेस्ट मोडल री गाडी ओजू कणी कोड़े नी है। गेले चालता मनख बी देखी-देखी' न राजी वेवे के फलाणा जी आपाणे गाम न सैर रो नाम हाऊ ऊँचो कीदो सा।

दन आंत्यां केड़े कार ने मेलणी पड़े घर रे आगे, क्यूँ के घर में तो जगा हैई न्हीं। अबे दरपणी या वळे के रात में कोई लेई गियो के, कणी नुकसाण करी दीधो तो काई वेला। कोई पैड़ा'ई खोली' न लेईन परो जावेला तो? नवी कार रे तो कोई हाथ बी लगाई देवे तो रंग परो उतरे। आखी रात नींद न्हीं आवे। जीव में खटको वणियो ई रेवे। आतमा बळी'न राखोड़ो वेई जावे।

कार लेती दाण सोरूम में डीलर ने इस्टाम्प पे लिखी'न देणो पड़े के म्हारे घर में कार मेलवा री पारकिंग है। पण असल पारकिंग है कठे। वा या तो कागद पे है या घर बारणे सड़क पे है। असी पारकिंग जणी रो कोई अतो-पतो'ई न्हीं है। कार बी होचे के म्हारो धणी लाखों रिप्या री चीज तो लायो जणीरी कोई कांण-कदर'ई कोई नी। म्हारी गत तो घर बारणे बेवा वाळा टेगड़ा जसी करी नाकी है। खटारा-खटारा कांतरी नाजोगी कारां पड़ी है घरां रे बारणे। म्हारी गणती बी वणा में' ईस वेईगी अबे। अस्यो काई करम-खोडलो मालक मल्यो मने। अणी वचे तो 'बेकार' रे'ई जातो तो'ई हाऊ रेवतो।

अठीने कार घर बारणे पड़ी है न वठीने पाड़ोसियां रे लाय लागी री है। काळजा पे हांप लोटी रिया है। गळी में खाली जगा पेला ऊं कमती ही, बाकी कसर यो फेरु नवी कार लेई'न आई गियो। अबे अणी ने कठे रांधेला न कठे बांधेला। अणी री कार रे तो मोचा पाड़ना'ईस पड़ेला जदी अणी री अकल ठकाणे आवेला। एक पाड़ोसी वणीरी कार पाछी लेती वेळा नामिक अड़ाई दीदी परी। के पछे महाभारत असी मची के पेली तो गाळ-गचैड़,पछे लाठी-होटा न आखिर में तो तरवारां निकळी गी। केई लोयां जाण वेई गिया, जणा ने सपाखाने ले जाणा पड़्या। पारकिंग रो टन्टो आपस रा मेळ-मलाप रो तो रापा-टोळ्यो करी नाके।

पारकिंग कणी-कणी रे घर में'ईस वेवे। वे मनख तो किस्मत वाळा केवावे। वणारे घर में कारां साप-सूप वणी-ठणी'न रेवे न घर बारणे टेस ऊं न ठसका'ऊं निकळे। वणा में बे'इन "टौमी" बी हांज-हवेरे घूमवा ने जावे। पण घणा खरा तो मोफत री पारकिंग रा मजा लेई रिया है। कोई सिकायत बी न्हीं करे। कारण यो के दूजा ने फसावा वाला तो खुद बी आपरती जाळ में फसी जावे। एक सनीमो जणी रो नाम तो थां जाणता'ईस वोला, वणी में हीरो राजकुमार केवे है के "जणा रा घर कांच रा वण्या लगा वेवे, वे दूजा रे घरां पे भाटा न्हीं फेंके... चिनाय सेठ"। आज री टेम में वना पारकिंग वाळा चिनाय सेठ पाड़ोसी रे घर में भाटा-टोळा फेंकवा री हिम्मत न्हीं करी सके। अणी में'ईस वणा री भलाई है। हाथ तो पेली कटाई'न देई राख्या है।

आपां चिनाय सेठ न्हीं वण्या तो न्हीं री वात। जीव ऊं तो होरा हां। टेम ऊं टेम रोटा भाजी खा'ई रिया हां। फेरु काई सावे। आपाणी साइसिकल री पारकिंग तो डागळा हेटे पक्की है'ईस।

डॉ. गोपाल राजगोपाल
वरिष्ठ आचार्य और राजभाषा संपर्क अधिकारी
आरएनटीमेडिकल कॉलेज,उदयपुर
मो. 9414342523

vedanta
transforming for good
HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India
हिन्दुस्तान ज़िंक के 'इकोजेन' एशिया के पहले कम कार्बन वाले 'ग्रीन' ज़िंक के साथ मिल कर रखें भारत के मजबूत विकास की नींव
आप सभी को 78 वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
EcoZen
SHG 99.995
• रिन्यूएबल एनर्जी के उपयोग से बने, इकोजेन में उत्पादित ज़िंक के प्रति टन कार्बन समतुल्य 1 टन से भी कम कार्बन फुटप्रिंट है • वैश्विक औसत की तुलना में 75 प्रतिशत कम ग्लोबल वार्मिंग की खासियत • इकोजेन के साथ एक टन स्टील को गैल्वनाइज करने में लगभग 400 किलोग्राम का कुल कार्बन उत्सर्जन की बचत • स्टील, ऑटोमोटिव, इंफ्रास्ट्रक्चर और सनराइज सेक्टर जैसे रिन्यूएबल एनर्जी, हाई टेक मैन्युफैक्चरिंग, ऊर्जा भंडारण और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी में उपयोग किये जाने वाले उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला।
EcoZen
Low carbon zinc
SAFE
SMART
SUSTAINABLE
यहां स्कैन कीजिये और जानिये किस तरह गैल्वेनाइज्ड जिंक, इंफ्रास्ट्रक्चर, भवन और स्मारक समय की कसौटी पर खरे उतरते हैं।
Yashad Bhawan, Udaipur - 313 004, Rajasthan, INDIA. Contact No: +91 294-6604000-02 www.hzlindia.com CIN L27204RJ1966PLC001208
https://www.linkedin.com/company/hindustanzinc/
https://www.facebook.com/HindustanZinc/
https://twitter.com/Hindustan_Zinc
https://www.instagram.com/hindustan_zinc/

वन्दे मातरम्

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

आमजन से अपील

खुले में कचरा न फेंके
स्वच्छता में सहयोग दें।

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

लाली बाई
सरपंच ग्रा. पं. नेड़च

भंवर रेबारी
उप सरपंच नेड़च

कालूलाल भील
सामाजिक कार्यकर्ता

अमित यादव
ग्राम विकास अधिकारी नेड़च

ग्राम पंचायत नेड़च
जिला राजसमंद

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

लीला बाई
सरपंच

वन्दे मातरम्

किशनसिंह
उप सरपंच

विष्णुकुमार शर्मा
ग्राम विकास अधिकारी

ग्राम पंचायत सेमल, जिला राजसमंद

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

आमजन से अपील

खुले में कचरा न फेंके
स्वच्छता में सहयोग दें।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

मांगीलाल सालवी
सरपंच

ग्राम पंचायत एमड़ी, जिला राजसमंद

जयवर्द्धन NEWS

जयवर्द्धन

C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स, द्वितीय मंजिल,
सौ फीट रोड, राजसमंद मो. 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews | jaivardhannews.com | liverajsamand | जयवर्द्धन